ज्ञानम् अनन्तम्
IIM TRICHY

संगम

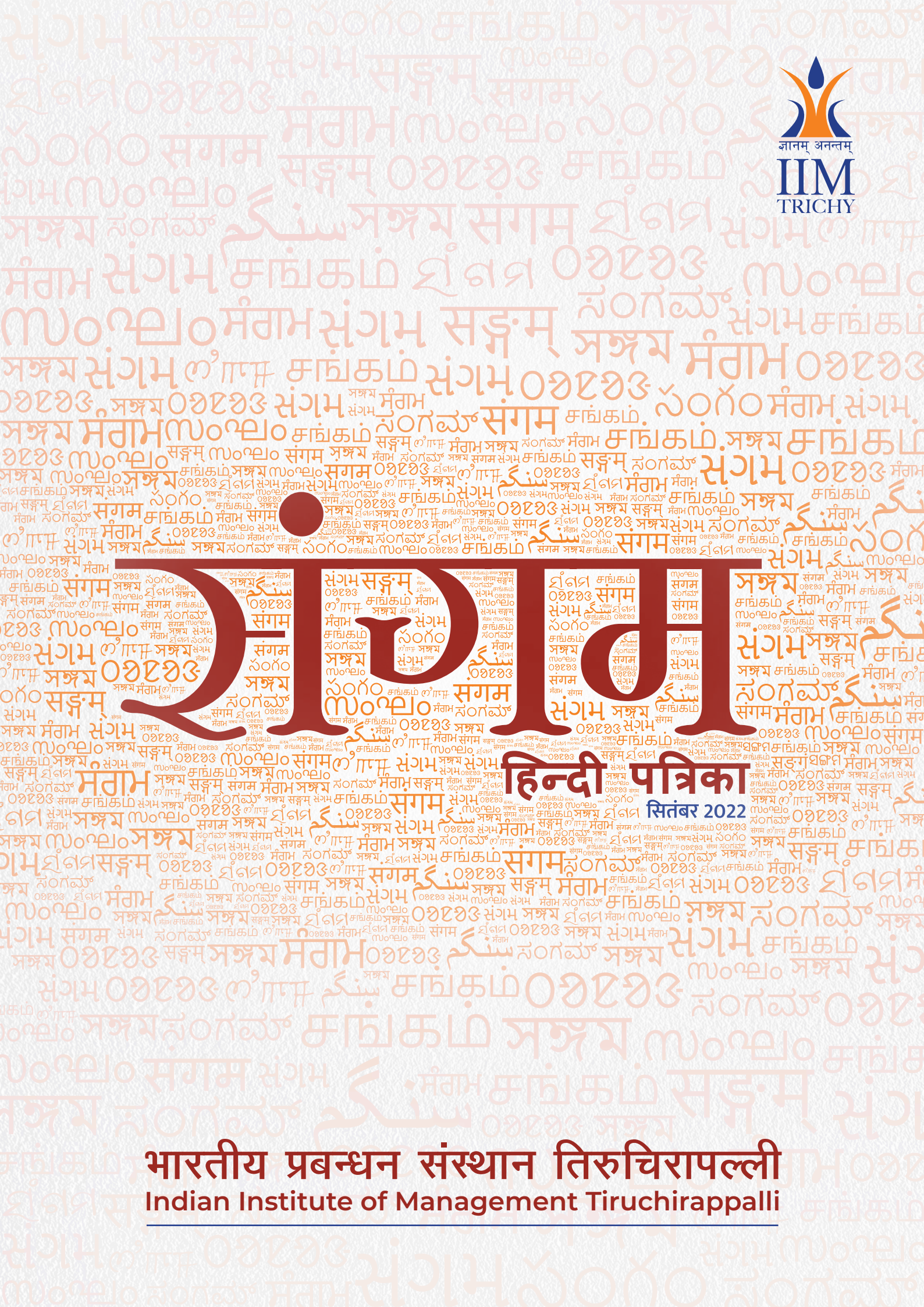

हिन्दी पत्रिका

सितंबर 2022

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली
Indian Institute of Management Tiruchirappalli

पत्रिका समिति के सदस्य:
प्रो. जंग बहादुर सिंह
प्रो. अपूर्व कुमार खरे
प्रो. अभिषेक तोतावार
श्री. आर शंकरन
डॉ. के. इलवळ्गन
श्रीमती सजीला नाज़र
श्री. राजू कुमार चौधरी

प्रतिलिप्यधिकार
भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली
सर्वाधिकार सुरक्षित
इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेरोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित
पुस्तक : संगम

© भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

संस्करण : द्वितीय
वर्ष : 2022

प्रकाशक: भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रक:
सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि. बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-1, 13वां तल, यूनिट 29, ब्लॉक ईएम-3, सेक्टर-V, साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल – 700091

विषय-सूची

सम्पादकीय 2
निदेशक का संदेश 3

काव्य

तिरुक्कुरल की महिमा - डॉ. पवन कुमार सिंह 4
मानवता - शाश्वत जैन 5
बचपन की यादें - मुरली एन 6
चलों कहीं दूर चलते हैं - शिमरोन पात्रो 6
संगम - राजू चौधरी 7
अंधेरे को कर अंगीकार - अम्बर भारद्वाज 8
माँ! तुम कितनी सुन्दर हो - दीपाक्षी शर्मा 9
खुशकिस्मती - उत्सव गोस्वामी 10
बात निकल जाने दो - विवेक कुमार 10
कैद - गौतम भास्कर 11
बेवजूद हस्ती - गौतम भास्कर 11
मैं मुझमें थोड़ा जिंदा रहना चाहता हूँ - अजयसिंह वाघेला 12
तू अड़िग तू अजर - आदित्य वी. रावत 13
चादरियां - आर. शंकरन 14
ट्रेन एक सफर - इन्ज़मामुल होदा 15
आत्मशक्ति - दिव्या द्विवेदी 16
जीवन शिव है - मोनिका कौशिक 17
इक मुलाकात - सीमा नौला 18
माँ - रीधिमा गुप्ता 19
काल का भविष्य - अजेश यादव 20
दूसरा कर्ण - सुमित बनर्जी 21
पानी तेरी अनोखी कहानी - जैस्मिन माखेचा 23
कुछ विचार, विचार करने योग्य - बिमला देवी 24
दिल या दिमाग - विजया. वी 25
मैंने एक शाम संजोह कर रखी है - पार्थ शर्मा 26
हाँ याद है मुझे - अंकित सिंह 27
जिन्दगी - डॉ. गौरी संजय राने 28
वीर सैनिक - कमांडर (रिटायर्ड) सत देव 29
उम्रदराज - अलका शर्मा 30

कहानी

समय की शिक्षा - कार्तिक विश्वकर्मा 31
असमंजस - कोविद रंजन 32
संघर्ष (भाग-1) - राजू चौधरी 34
अनुपात - विवेक शरण 36
घाट बनारस - सुमित बनर्जी 39
दिल्ली दरबार - अंकित सिंह 41
मीठा बदला लेने के लिए एक नयी अभिलाषा और कौशल - डॉ. एलिजाबेथ वर्षा पॉल 43
स्वर्ग से एक यमदुत - डॉ. एलिजाबेथ वर्षा पॉल 44

निबंध

समाज में महिलाओं की स्थिति - हेमलता शिवकुमार 45
शबरी के राम - पूनम सिंह 46
रियल बनाम रील - प्रभावशाली व्यक्ति - अंकित शर्मा 47
5G स्पेक्ट्रम - वैभव राजाराम ठाकुर 49
शिक्षा के माध्यम के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं एवं वाचन-संस्कृति के संकोच की प्रक्रिया - डॉ. अशोक धुलधुले 52

बाल्य कक्ष

सच्चे दोस्त - के. एम. हर्षिता 55
बूढ़ी अम्मा और उसका कार्य - के. एम. हरिश 55
मेरी बगिया - अग्रिमा सुजीत शर्मा 56
रीनू और कीर्ति की दोस्ती - अनाया दीक्षित 56
बाल गीत - अनाया दीक्षित 57
अनमोल उपहार - अद्विता खरे 58

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

हमारे संस्थान की 'संगम' पत्रिका के दूसरे संस्करण को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

'संगम' का प्रथम संस्करण 2021 के सितंबर माह में प्रकाशित हुआ था। आप पाठकों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया को देखते हुए विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'संगम' को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। पत्रिका के प्रथम संस्करण के संदर्भ में दी गयी आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रिया को आधार बनाते हुए इस संस्करण में कुछ आवश्यक संशोधन किए गए हैं।

हम उन सभी के कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने विचार लेख, कहानी, कविता, इत्यादि हमसे साझा किए हैं। विचारों के इन्हीं 'संगम' से तो पत्रिका की काया अभिकल्पित है।

हम हमारे संस्थान के निदेशक (डॉ.) पवन कुमार सिंह का सहृदय धन्यवाद करते हैं, जिनके बहुमूल्य सुझाव से पत्रिका का मुख पत्र प्रारूप अभिरूपित हो पाया है।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका अपने मूल भाव 'विचारों के संगम' को चरितार्थ करने में सफल होगी। भरपूर सतर्कता के बावजूद कोई भी कृति सौ प्रतिशत दोषरहित नहीं कही जा सकती,इसलिए आपसे निवेदन है कि आप इसे पाठक के साथ-साथ एक आलोचक की निगाह से भी पढ़ें। आपके टिप्पणियों एवं सुझावों के आधार पर हम पत्रिका के आगामी संस्करण को और बेहतर बना सकेंगे।

धन्यवाद एवं शुभकामनाएं,

सम्पादकीय समिति

डॉ. पवन कुमार सिंह
निदेशक

निदेशक का संदेश

प्रिय साथियों, विद्यार्थियों, सहभागियों तथा शुभचिंतकों !

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली की हिन्दी पत्रिका ‘संगम’ का द्वितीय संस्करण आपको हस्तगत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। पिछले वर्ष हमने हिन्दी पत्रिका का प्रथम संस्करण प्रकाशित किया था।

भाषा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। भाषा के सन्दर्भ में भारतवर्ष एक अत्यन्त मनोहारी पुष्पगुच्छ है, जिसमें कई मधुर भाषाओं का सम्मिलन है। दक्षिण भारत में संत तिरुवल्लुवर, पुरन्दरदास, वेमना और अन्य महान आत्माओं ने अपनी-अपनी भाषा में अपने प्रभु के गुण गाये और समाज को सही दिशा में चलने के मार्ग को बताया। सुदूर उत्तर भारत में गुरुनानक, बाबा फरीद, बुल्ले शाह ने भक्ति रस से वातावरण को सींचा। पश्चिम के क्षेत्र में दादू दयाल, रज्जब, नरसी मेहता, संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, स्वामी समर्थ रामदास, संत तुकाराम आदि अनेक संतों ने अपनी वाणी और लेखनी से समाज को प्राणपण किया। भारत के पूर्वी भाग में विद्यापति, चंडीदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि कई महाकवियों ने मानव के सूक्ष्म भावों को शब्दों में उकेरा। इन सभी की कृतियों का अध्ययन और मनन मनुष्य के चेतना के विकास में उत्प्रेरक का काम करता है।

हिन्दी जगत के व्योम में अत्यन्त चमकीलें सितारों का प्रादुर्भाव हुआ। गद्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मुंशी प्रेमचन्द इत्यादि ने हिन्दी साहित्य को खड़ा किया तथा गरिमा प्रदान की। पद्य में संत कबीर, तुलसीदास, मल्लिक मुहम्मद जायसी, सूरदास, रसखान, भूषण, बिहारी, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी इत्यादि ने गहन साहित्य का सृजन कर हिन्दी को विश्व में समृद्धत्तम भाषाओं की श्रेणी में ला खड़ा किया है। इनकी कृतियों को पढ़कर ही हम इनके श्रम का ऋण चुका सकते हैं।

हमें अपनी मातृभाषा, देश को जोड़ने वाली हिन्दी भाषा, देश की अन्य भाषा, विश्व के बड़े भू-भाग से जोड़ने वाली अंग्रेजी भाषा तथा अपनी रुचि की अन्य भाषाओं के सरल साहित्यों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

इस हिन्दी पत्रिका का आप आनन्द उठायें तथा इसे और सशक्त बनाने का मार्ग सुझाएं।

डॉ. पवन कुमार सिंह
निदेशक

तिरुक्कुरल की महिमा

तिरुक्कुरल है प्यारा शब्द, शब्द के अर्थ ने मोहा।
तिरु का अर्थ है श्रीयुक्त, कुरल है छोटा दोहा।।

तिरुक्कुरल महिमा अपार, वर्ष हुए अब दो हजार।
तिरुवल्लुवर ने जब रचा, शास्त्र जगत में धूम मचा।।

इस कृति के तीन खंड, ज्ञान का भंडार प्रचंड।
एक-सौ-तैंतीस अध्याय, मानव धन्य संपदा पाय।।

प्रति अध्याय में कुल दस दोहे, सात शब्द हर दोहा सोहे।
कुल दोहे प्रसाद वागीश, एक-हजार-तीन-सौ-तीस।।

प्रथम खंड अरम कहलाता, द्वितीय नाम है पोरुल भाता।
तृतीय को कहते इन्बम, देते प्रकाश सब हरते तम।।

अरम का अर्थ है सद्गुण, पोरुल अर्थ सम्पत्ति।
इन्बम का अर्थ है प्रेम, दे सुख हरें विपत्ति।।

सद्गुण के अड़तीस अध्याय, सम्पत्ति पर दस साठ।
प्रेम पर अध्याय पचीस, जो समझे उनके ठाठ।।

ईश्वर के प्रति कृतज्ञता, सबसे पहला दोहा।
इस ग्रंथ के प्रारम्भ ने, सबके मन को मोहा।।

तप और सद्गुण मानव का, दो शाश्वत आभूषण।
सरल हृदय हो मानव, हो मुक्त आन्तरिक दूषण।।

यह सद्ग्रंथ बताता, कैसे रहें गृहस्थ।
मानवगुण कैसे बढ़ें, दुर्गुण कैसे हों पस्त।।

संभाषण कौशल हो, और सभा चातुर्य।
सच्चरित्र के बल पर, चमकें जैसे सूर्य।।

शासक को क्या करना, कैसे बढ़े विपुलता।
राष्ट्र सुरक्षित हो तो, चूमे कदम सफलता।।

भाव शुद्ध ही प्रेम है, प्रेम में पड़ता तपना।
बिना आस के याद करे, वो ही होता अपना।।

तिरुक्कुरल की महिमा, कहलाये पंचम वेद।
पढ़ने गुनने से जीवन के, मिट जायें सब खेद।।

शाश्वत जैन
पी.जी.पी.एम.2020-22

मानवता

एक मासूम-सी कमसिन लड़की,
जो सच्चाई एवं मानवता की स्वच्छ और बेदाग साड़ी पहने,
विकास एवं अवसर के मूल्यों से चित्रित ब्लाउज पहने हुए,
बहुराष्ट्रीय कम्पनी के युग में अंतर्राष्ट्रीय बाजार से गायब,
प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कुछ भौतिकवादी अपराधी आए,
अनैतिकता की गाड़ी में उसे उठाकर ले गए ।
अवसरवादी राजनेता हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें,
आपसे विनती है कि –
जिस किसी को वह मिले तो उसे घर तक छोड़े,
राह खर्च के अलावा उचित इनाम दिया जाएगा उसे,
उस लड़की का नाम है मानवता।

मुरली एन
प्रशासनिक अधिकारी

बचपन की यादें

जब हम रो नहीं पाते
ठिक से सो नहीं पाते
जब हम खेल नहीं पाते
तब बचपन याद आता है.....
जब चिंता सताती है
हमारे तन को खाती है
जब मन नहीं लगता
तब बचपन याद आता है.....
जब हम टूट जाते हैं
तब अपने रुठ जाते हैं
जब सपने सताते हैं
तब बचपन याद आता है.....
बच्चें हम रह नहीं जाते
बड़े हम हो नहीं पाते
खड़े हम रह नहीं पाते
तब बचपन याद आता है.....
किसी के संग हम हो नहीं पाते
अकेले हम रह नहीं पाते
किसी को कह नहीं पाते
तब बचपन याद आता है.....

शिमरोन पात्रो
पी.जी.पी.एम.-एच.
आर.2021-23

चलो कहीं दूर चलते हैं

चलो कहीं दूर चलते हैं,
चलो-चलो, जरूर चलते हैं।
परिंदो की तरह सीमाओं से परे,
सागर, नदियाँ, वन, उपवन हरे,
उन्मुक्त गगन के नीचे,
विचरण करने भरपूर चलते हैं,
चलो कहीं दूर चलते हैं,
चलो चलो, जरूर चलते हैं।

मन की व्यथा से दूर,
आनंद से होकर भरपूर,
छोड़ के दुनिया के दस्तूर,
तुमसे भी, मुझसे भी,
चलो कहीं दूर चलते हैं,
चलो-चलो, जरूर चलते हैं ।

राजू चौधरी
हिन्दी पर्यवेक्षक

संगम

संगम है माता जो करती है
अपने बच्चों से प्यार
कौन है ? जो करेगा
इसके पैरों को छूने से इन्कार।

वो पापी होगा, दुष्ट होगा
जिसे न होगा सभी का मिलन स्वीकार
क्या जी सकेगा अपनों से बिछुड़ कर यह संसार?

संगम महज एक शब्द नहीं
यह है भाषा का संसार
जो करती है सारी भाषाओं का सम्मान ।

संगम उम्मीद है मिलायेगी
बिछडों को अपनो से
फिर से सजाएंगी खुशियाँ टूटे हुए सपनों के
संगम नहीं है नाम हार कर रोने का
संगम तो नाम है जीत कर खुशियाँ मनाने का ।

अम्बर भारद्वाज
पी.जी.पी.एम. 2022-24

अंधेरे को कर अंगीकार

अंधेरे को कर अंगीकार
काली रात में तैरना सीख
अंधेरे को कर अंगीकार
तट की मत मांग भीख
और आगे और गहरा
नहीं है कोई पहरा
सुबह सूर्य को लगा दे फटकार
अंधेरे को कर अंगीकार।

सो रही है दुनिया सारी
पर तू मत आंखे मूंद
निहार तारे प्यारे, जुगनू प्यारे
सूर्य की किरण को मत ढूंढ़
मेहनत से जग में मचा दे हाहाकार
अंधेरे को कर अंगीकार।

वृक्ष हैं सो रहें, चिड़ियां नहीं चहक रही
जीव-जन्तु कर रहे सूरज का इंतजार
वक्त सब खो रहें, जीत नहीं महक रही
निशा पे होके सवार
अंधेरे को कर अंगीकार।

दीपाक्षी शर्मा
पी.जी.पी.एम. 2022-24

माँ ! तुम कितनी सुंदर हो

माँ तुम कितनी सुंदर हो,
तन की उजली, मन की निर्मल,
ज्यों शांत महावन, उपवन हो,
माँ तुम कितनी सुंदर हो।।

उज्ज्वल, धवल तुम्हारा चेहरा,
भूल ना पाये कभी मन मेरा,
मीठे, सुरीले सुरताल में
बजती हो ऐसी जलतरंग हो
माँ तुम कितनी सुंदर हो।

पास थी तो रहें बिसराये,
आज तुम्हारी याद सताये,
हर मन में भर दे जो तरंग,
ऐसी अद्भुत तुम उमंग हो।
माँ तुम कितनी सुंदर हो।।

उत्सव गोस्वामी
पी.जी.पी.एम.2022-24

खुशकिस्मती

खुशकिस्मती थी मेरी
तुम मेरी जिंदगी में आयी एक रात,
लगता नहीं था होगा कभी सवेरा ।
डर-डर के चल रहा था मैं जिंदगी के साथ,
सोच कर की छोड़ देने वाला कोई अपना ही होगा।
मान लिया था कि वक्त अब ऐसा ही होगा,
खुशियां आना अब सिर्फ एक सपना होगा।
लेकिन फिर तुम आयी,
फिर वो रात एक सवेरा बन गया।
फिर वो डर बस एक एहसास बन गया।
फिर वो वक्त, इतिहास बन गया।

विवेक कुमार
पी.जी.सी.एस.
सी.एम.2020-22

बात निकल जाने दो

जो दिल में छुपी है बात,
बात निकल जाने दो,
बड़ी लम्बी है यें रात,
रात निकल जाने दो,
कब तलक रुठे रहोगे तुम मुझसे,
आँखों में छुपी बरसात,
बरसात निकल जाने दो,
जो भी दिल में छुपी है बात,
बात निकल जाने दो,

ऐसे नजरें छुपा के बैठी हो,
गम को सीने में दबा के बैठी हो,
बड़ी मुश्किल में है जज़्बात,
जज़्बात निकल जाने दो,
जो भी दिल में छुपी है बात,
बात निकल जाने दो।

गौतम भास्कर
एफ पी. एम. 2017

कैद

गुमान में डूबी थी पूरी हयात
सहर के इंतज़ार में फिर रात हुआ,

कैसे कहें की नहीं मानी है हार
नए कैदखाने का फरमान हुआ,

कु-ए-यार की तमन्ना में गुजारी थी रात
सुबह उठा तो सब ख़ाक हुआ,

तूफ़ान ने झकझोर दिया दरख़्त को
वसंत आई तो दरख़्त फिर फलदार हुआ,

एब थी उसमें सच बोलने की
सच बोला तो शायर बदनाम हुआ ।

बेवजूद हस्ती

याद है हर पल नहीं
याद है कभी-कभी

क्या है गम-ए-शिकस्तगी
डगर जो बढ़ी नहीं

शबनम जो फना हुए
दाग़ तक बनी नहीं

मोतियां जो बिखर गए
किसी की कोई खबर नहीं

जुनून का इज़ाफ़ा हुआ
मुकर्रर पन्नों में सिमट गए

हौसले से जो बढ़े कदम
बदस्तूर फंदों से जकड़ गए

आशनाई जो चढ़ी शाम
खुम-ओ-सागर में उतर गए

एक हस्ती थी हमारी
बेवजूद हुए और रो पड़े।

अजयसिंह वाघेला
पी.जी. सी.एस.एच.आर.एम. 2022-24

मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ

मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ,
मैं बन के लहरें, समुंदर से लड़ना चाहता हूँ,
मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ.....

पहाड़, पानी, आग से डरना फितरत नहीं मेरी,
मैं हवा बन के इनका रुख मोड़ना चाहता हूँ,
मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ.....

ज़माने के इस रीति-रिवाज़, नियम से सब परे हैं,
मैं कुदरत का हाथ थामे आगे चलना चाहता हूँ,
मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ.....

क्या करेंगे इस बेईमानी के करोड़ों कमा कर,
खाली हाथ आये थे, खाली हाथ ही जाना है,
मैं तो चन्द लम्हें ज़िन्दगी के सुकून से संवारना चाहता हूँ,
मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ.....

प्यार, पैसा, सुकून, वक़्त नहीं मिलेगा एक साथ,
सब कुछ में कुछ-कुछ, क़तरा-क़तरा समेटने की कोशिश करना चाहता हूँ,
मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ.....

मैं मुझमें थोड़ा ज़िंदा रहना चाहता हूँ.....

आदित्य वी. रावत
ई.जी.एम.पी. 2020-21

तू अडिग तू अजर

तू अडिग तू अजर, तू बढ़ चल आगे बढ़।।
तुझ में अभी सांस तुझ में अभी प्राण है ।।
तू अपने अस्तित्व का अब अभिमान कर ।।

पहचान इस अस्तित्व को पहचान अपने शस्त्र को ।।
तू वायु-सा तीव्र है तू ताप अंगार-सा ।।
तू अपने मकसद का यूं ऐसे न पश्चाताप कर ।।
तुझ में एक उबल है तुझमें एक मशाल है ।।

तू कर कुछ कर गुजर ।।
तू अपने इस सिद्धांत को ऐसे न उजाड़ कर ।।

तू अडिग तू निडर, तू बढ़ अब आगे चल ।।
तू कर कुछ कर गुजर, आगे बढ़ पथ पर चल ।।

“अपने आत्मविश्वास की ज्योति को कभी न बुझने दे” ।

आर. शंकरन
वित्तीय लेखा परीक्षक और मुख्य लेखा अधिकारी

चादरियां

मेरी प्यारी चादरियां !
पहला और एकमात्र विकल्प
मेरी प्यारी माँ की गोद की।
इस ठंडी दुनिया में गर्मी का दूसरा स्रोत
मेरी माँ की छाती के अलावा।
बीहड़ और सनकी दुनिया की प्रतिरोधी
अनेक शत्रुओं से मेरी अंग रक्षक ।
मुझे कोमल स्थान प्रदान करके
आराम और चैन की नींद से मिलवाया।

मेरी प्यारी चादरियां!
पहाड़ी भेड़ के बालों से तुम नहीं बुने
लेकिन मेरी प्यारी माँ की नसों से ।
हर धागे में मेरे लिए उसका प्यार थामे हुए
मेरे हर कदम के लिए हर पल जिंदा ।
हर धागा मेरी माँ की नस है जिसमें
उसका खून दौड़ता है मुझमें निरन्तर ।
मुझे आराम, जोश और शक्ति देकर
इस क्रूर दुनिया का सामना करने के लिए ।
मेरी प्यारी चादरियां!
सोने के लिए सिर्फ ऊन की गठरी नहीं
खटिये पर कपड़े का टुकडा नहीं ।
यह मेरी सांत्वना का एक शरण है
कठोर और निष्कर्षण वाली दुनिया से।
बड़े होने के कष्टों से खुद को
ढकने की एक अपनी जगह ।
उस भगवान की एक कड़ी, जो मेरी रक्षक थी
जब मैं उसके सिवा कुछ नहीं जानता था।

मेरी प्यारी चादरियां!
संपत्ति नहीं, जायदाद नहीं
यह मेरी सांस है, मेरी मां से मेरी कड़ी ।
जिसने दिया जन्म, पालन और शिक्षा
लेकिन ऊपर बादलों के बीच छुप गयी।
यह मेरी आत्मा और शरीर को बांध देगा
उस परम प्रेम के तत्व के साथ ।
जैसे ही समय आता है, पिंजडे से निकलने का
वैसे ही वह मेरे शरीर से अलग हो जाता है।

हे मेरी प्यारी चादरियां !
मैं तुझे इस धरती पर छोड़ चला जाऊंगा,
माँ की ममता का जीता जागता उदाहरण ।
जहाँ भी एक बच्चा हो, माँ के स्पर्श का प्यासा
उसके लिए ममता का सहारा बनकर रहना ।
जैसे तुम मेरे लिए थे, ज़रा भी कम नहीं
वैसे ही तुम उसके लिए भी रहना, ज़रा भी कम नहीं।

इन्ज़मामुल होदा
पी.जी.पी.एम.-एच.आर. 2020-22

ट्रेन एक सफर

गुजरते रास्तों, पेड़ों, सिग्नलों और स्टेशनों के बीच,
मन अब भी कहीं कॉलेज की चार दिवारी में है,
मन में है कि मैं शायद फिर कभी वक़्त को वक़्त न समझ पाऊं।
फिर देखूँगा इसे मैं सुबह- शाम, दिन-रात की तरह,
जैसे बाकी दुनिया देखती है।
कॉलेज में जब चाहा सो गये, जब चाहा खेल लियें,
टहलने का तो पूछो मत और किताबों की तरफ देखो मत,
फिर भी पढ़ाने वाले पढ़ा ही देते थे।
कभी फिल्मों की लत होती थी तो कभी पढ़ाई की,
या फिर कभी लत सच में लत होती थी,
बहुतों को जाना और समझा,
फिर भी बहुत अंजान रहे
दोस्त कम बने लेकिन वफ़ादार रहे
ये सारी यादें हमेशा के लिए दिल में रहेंगी।
अभी भी जैसे-जैसे ट्रेन घर से शहर की ओर बढ़ता है,
एक इन्तज़ार पनपता है इन यादों के बीच,
इन्तज़ार घर के आंगन का, खेलते बच्चों का,
कच्चे-पक्के अमरूदों का, अपने आपसी रिश्तों का ।
शायद यही इंतज़ार है जो कम करता है,
कॉलेज और दोस्तों से अलग होने के दुख को ।
मजे की बात ये है कि जब घर से कॉलेज को निकला था,
तब घर से अलग होने का दुख था और कॉलेज का इन्तज़ार।
ज़िंदगी एक सफर है जो चलती रहेगी इस ट्रेन की तरह

दिव्या द्विवेदी
पत्नी, प्रो. बिपिन दीक्षित

आत्मशक्ति

आत्मशक्ति की पहचान करो
हर लक्ष्य हेतु पूर्ण प्रयास करो

समय नहीं ये विराम का
समय नहीं है विश्राम का
जो स्वप्न हैं इतने हृदय में
उठो ! उन्हें साकार करो

आत्मशक्ति की पहचान करो
हर लक्ष्य हेतु पूर्ण प्रयास करो

विचारों में हो तेज इतना
कि कोई ना उनको रोक पाए
ताप हो ऐसा हृदय में
कि सूरज भी अचरज पाए
जो चूक जाते हों लक्ष्य से तो
स्वयं को कदापि ना निराश करो
आत्मशक्ति की पहचान करो
हर लक्ष्य हेतु पूर्ण प्रयास करो
मान और सम्मान तेरा
बस तेरा अधिकार है
स्वामिनी है तू स्वयं की
दास यह संसार है
तोड़ कर सब बेड़ियाँ अब
तुम पुनर्विचार करो

आत्मशक्ति की पहचान करो
हर लक्ष्य हेतु पूर्ण प्रयास करो

तू है अंबा, तू है दुर्गा
तू ही शक्ति का रूप है
पाँव तो हर क्षण जलेंगे
जीवन कड़ी-सी धूप है
पार सब कठिनाइयाँ कर
तुम स्व-उत्थान करो

आत्मशक्ति की पहचान करो
हर लक्ष्य हेतु पूर्ण प्रयास करो

जन्म तेरा इस धरा पर
निरर्थक, निरुदेश्य नहीं
आरम्भ है तू नव युग का
इस युग का अवशेष नहीं
जान कर अपने गुणों को
इस सृष्टि का कल्याण करो

आत्मशक्ति की पहचान करो
हर लक्ष्य हेतु पूर्ण प्रयास करो।

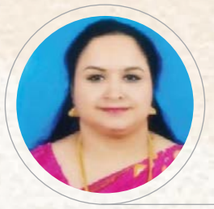

मोनिका कौशिक
पत्नी, प्रो. सुजीत कुमार शर्मा

जीवन शिव है

जीवन क्या है ? भावों की एक समरसता है,
सुख-दुःख और उत्थान पतन की, मन की एक अवस्था है।

जीवन को जानने हेतु मौत एक व्यवस्था है,
कब और कैसे होगा सब, यह भी प्रासंगिकता है।

आओ तुमको जीवन का अर्थ बताऊं मैं,
जिंदादिली से भी अवगत कराऊं मैं।

जीवन शिव (कल्याण) है, शिव ही जीवन है,
शिव को समझना भी बड़ा कठिन है।

नीलकंठ कहलाए थे जब विष को गले लगाया था,
अमरता की लालसा त्याग, गरल को अपनाया था।

कितना वैरागी वो शिव है, जिसने विष का पान किया,
अपने निज हित का त्याग कर, देवो का उत्थान किया।

आशुतोष क्षण भर में ही खुश हो भरमा जाते है,
सूखे पत्तों की पूजा से ही जीवन सुखी बना जाते है।

सिर पर अंतरिक्ष-सी जटा, चंद्र की उज्ज्वलता मस्तक पें,
गंगा मैया का वेग समेटे, त्रिलोक का भार स्कंधों पे।

कंठ में सर्प धारण किए वे, त्रिशूल निज हस्त धरे,
त्रिनेत्रों की महिमा ऐसी, की धरती और पाताल डरे।

ऐसे औघड़ योगी शिव के डमरू का जो सुनो नाद,
जीवन और मृत्यु के ज्ञान का मिल जाए तुमको संवाद।

बाघम्बर देह पर लपेटे और नंदी को वाहन चुना,
अनुकूल और प्रतिकूल का ऐसा संगम नही सुना।

हाय-हाय कर दिन-रात, स्वार्थ वश में डूबे इंसान,
जीवन त्याग है, एक समर्पण, तू भी अब इसको पहचान।

शिव कोई चरित्र मात्र नहीं, जीवन की सच्चाई है,
धरती पर इंसानियत की जीवंत एक परछाई है।

सुख-दुःख, ऊंच नीच, अच्छे बुरे को त्याग,
वसुधैव कुटुंबकम ही है इस जीवन का अनुराग।

जब कभी दर्प से मान आए, एक बार श्मशान हो आना,
जीवन शिव है, यही कहता है, ज्ञान चक्षु का खुल जाना।

सीमा नौला
डी. पी. एम. (शोधार्थी)

इक मुलाकात

पालने में झूलती हुई,
स्कूटी पर इतराती हुई,
उम्र के पड़ाव पर बढ़ती हुई,
तीन स्त्रियां चर्चा करने लगी।
तीनों के परिवेश थे भिन्न,
तीनों की जीवनशैली विभिन्न,
फिर भी बातें चलती रही।

विद्यालय की पोशाक पहनी हुई,
जीन्स-टॉप में दम्भ भरती हुई,
सात गज की साड़ी लपेटी हुई,
तीन स्त्रियां चर्चा करने लगी।
तीनों की राहें थी भिन्न,
तीनों की रीतियां विभिन्न,
फिर भी बातें चलती रही।

महाविद्यालय को जाती हुई,
घर-गृहस्थी सजाती हुई,
ऑफिस के काम निपटाती हुई,
तीन स्त्रियां चर्चा करने लगी।
तीनों के सपने थे भिन्न,
तीनों की आकांक्षाएं विभिन्न,
फिर भी बातें चलती रही।
आपसी असमानताएं गिनती हुई,
गैर जीवन की प्रशस्ति की बाते करती हुई,
वार्तालाप को आगे बढ़ाते हुई,
हँसी ठिठोली से भरे कदम बढ़ने लगी।
सबके दुःख न थे भिन्न,
सबके संघर्ष थे अभिन्न,
बातें गंभीर होती गयी।

जब बातें आपस में चार हुई,
स्वतः समानता उभार हुई,
मानवता शर्मसार हुई,
जब आपबीती सबकी उजगार हुई।
समरूप हैवानियत की सब शिकार हुई,
कुछ अपनों से, तो कुछ परायों से संहार हुई,
सबकी रहाई समरस तार-तार हुई ।

रीधिमा गुप्ता
पी.जी.पी.एम. 2022-24

माँ

पैदा होने के पहले दर्द से भरी थी वो,
जैसे ही मैं इस दुनिया में आयी सारा दर्द भूल गयी वो,

वो पहला लम्हा था जब उसे यह एहसास हुआ,
उसकी बेटी से बढ़कर अब न कोई पास हुआ,

अपनी पहचान बनाओ बस यही सिखाया उसने
कभी डांट के तो कभी प्यार से सही-गलत में फर्क सिखाया उसने।

माँ आप ने अपनी पहचान नहीं बनायी जब मैंने यह सवाल पूछा -
माँ हूँ मैं तेरी अब यही अपनी पहचान बतायी -

दिन भर भाग दौड़कर जब थक कर बैठी वो,
माँ आवाज आई फिर उठकर चल दी वो,

काम चाहे वो घर का हो या बाहर का सुपरवूमेन की तरह उन्हें पूरा करती,
भले ही पूरी रात सोयी न होती पर मेरी नींद की फिक्र करती वो,

अरे! दिन-रात जिस प्यार की तलाश में निकली मैं वो प्यार कहाँ -
माँ की गोद में जब सिर रखा तो एहसास हुआ जन्नत है यहाँ -

अफसोस बस इतना है कि तुझे ये न बता पायी,
माँ मैं तुझे कितना प्यार करती हूँ ये न जता पायी,

लड़-झगड़ कर बस वक्त बर्बाद करती रही।
उन आख़िरी लम्हों को जीने की हिम्मत जुटाती रही।

माँ बस अब यही कहना चाहूँगी,
तेरी हर वो बात याद रहेगी तेरी हर वो सीख याद रहेगी,
तू नहीं है तो क्या हुआ तेरी दुआ हर पल मेरे साथ रहेगी।।

अजेश यादव
पी.जी.सी.एम.एम.ए.2021-22

काल का भविष्य

काल का भविष्य है
जो तू नहीं देखता,
आँखें तेरी बंद है,
तो क्या करेगा देवता ।

कर्म जो उस काल में किया
फल तो तुझे भोगना,
फिर अपने भाग्य से क्यों इतना रोना...
इस काल से ही सीखकर,
अगला कर्म तुझे है करना,
आगे बढ़, डर है किसका,
आगे बढ़, डर है किसका,
फल तो मिलेगा ही.. इतना क्यों है सोचता....

तू काल का भविष्य है,
जो तू नहीं देखता...

बात कोई नयी नहीं...
सदियों पुरानी है...
प्रभु देके गए पृथ्वी को,
अब मुझे लिख, पढ़ कर सुनानी है

तू काल का भविष्य है,
जो तू नहीं देखता...

पराजित की शंका में,
क्यों तू नहीं खेलता
अपने साहस को क्यों है,
कम तोलता
लड़ना ही ध्येय हो,
यह तो अब तू सोचना..

तू गिरेगा, तू रगड़ेगा, तू ही रोयेगा,
तू ही प्रयत्न भी करेगा
लिख डालेगा अपने भविष्य की स्मृति
क्योंकि -
तू काल का भविष्य है
जो तू अब है देखता...

सुमित बनर्जी
डी.पी.एम. (शोधार्थी)

दूसरा कर्ण

निर्वस्त्र, निरस्त्र खड़ा मैं रण में
क्या ऐसा युद्ध स्वीकार्य धर्म में ?
वासुदेव, तुम कहो तो ये भी मान्य
छला गया हूँ हर पल इस जन्म में
इस जग में मेरा उपहास हुआ
मेरे मान का ह्रास हुआ
कुमारों की प्रतियोगिता में
मेरे योग्यता पर अविश्वास हुआ
गुरु ने भी समझा ना समान
पार्थ हुआ सब का अमान
सूत होना मेरा दोष हुआ क्या ?
ना पुरुषार्थ देखा, ना वर्तमान
तप से सींचा मैंने अपना बल
फिर भी अपमान पिया जैसे हलाहल
दुर्योधन ने अपनाया मुझे
जब छिन गया था ममता का आँचल
सब पूछे मुझसे पहचान मेरा
मेरी भुजाएं ही हैं अभिमान मेरा
कौन्तेय से ना कम कौशल में
महाभारत रहेगा प्रमाण मेरा
नियति ने भी क्या व्यूह रचा
प्रथम पांडव भी बना प्रजा
माता भी आई हृदय से लगाने
तब जब महासमर का बिगुल बजा
राधेय, तुम हंसी कर जाते हो
अब तुम धर्म याद दिलाते हो
पहले रखा धर्म देहरी के बाहर
फिर अब क्यों विधि से कतराते हो ?

दोष नहीं तुम्हारा सूत होना है
पर इस बात पर कुंठित होना है
ध्यान इस पर नहीं कि क्या मिला ?
पर जो ना मिला उस पर रोना है
मित्र भी हुए तुम बहुत विशिष्ट
दुर्योधन के हुए अति घनिष्ठ
यह नहीं कि उसे सन्मार्ग पर लाओ
उसके पापों में हुए समान लिप्त
शकुनि, दुःशासन सब तुमसे गौण

धृतराष्ट्र, भीष्म भी खड़े रहे मौन
रोक सकते जो द्यूत क्रीड़ा तुम
जीत जाते सम्पूर्ण व्योम
द्रौपदी को सभा में अपमानित किया
वारांगना कह उसे संबोधित किया
रजोधर्मित स्त्री को जब केश से खींचा
तुम सब ने अपने काल को प्रतिध्वनित किया
युद्ध नहीं था कोई समाधान
पर जब हुआ, तब तुम कर गए दान
कवच-कुंडल जो बनाती अजेय मित्र को
मित्रता को परे, रखा खुद का मान
भुजा से अधिक शक्ति जिव्हा में होती
तुम अहंकारी, पर है विनीत किरीटी
भीष्म, द्रोण, गुरुजन का किया तिरस्कार
अतः अंतकाल में तुम्हारी मेधा सोती
भुजा बल में तुम्हारा कोई सानी नहीं है
पर तुम सा कोई अभिमानी नहीं है
जिसकी सुमति पर विराजे ईर्ष्या
उस ज्ञानी सा कोई अज्ञानी नही है
ना तुम रथी, ना अतिरथी
तुम सिर्फ़ हठी, हे रश्मिरथी
क्रोध-ईर्ष्या का दमन करते अगर
जग मोह करता, कहलाते महारथी
पर धर्म तब, वसुषेण, तुम भूले कहाँ
छः योद्धा अभिमन्यु से लड़े जहाँ
छल से जब मारा सुभद्रानंदन को
प्रतिशोध लेने खड़ा पिता यहाँ
अब धर्म का तुम कवच ना धरो
क्षत्रिय धर्म का पालन करो
उठाओ धनुष-बाण, तानो निशाना
आओ, अपनी मृत्यु से लड़ो
तुम्हारी मृत्यु से ना समर का अंत होगा
पर अमर तुम्हारा जीवन-मरण होगा
अपरिमित कौशल पर भी भारी है ईर्ष्या
यही तुम्हारा सच्चा स्मरण होगा।

जैस्मिन माखेचा
पुत्री, प्रो. उपम पुष्पक माखेचा

पानी तेरी अनोखी कहानी

होता अगर नहीं ये पानी,
कैसे होती धरती धानी ?
जीव-जन्तु कैसे जी पाते,
बिन पानी के सब बेमानी ।

प्यास बुझाता, भूक मिटाता,
सबका भोजन-दाता पानी।
आटा पानी से ही सनता
चावल दाल पकाता पानी।

कभी भाप बन उड़ जाता है,
कभी बर्फ बन जाता पानी।
रिम-झिम, रिम-झिम कभी बरस-बरस,
सबको खूब भीगाता पानी।

कुछ चीज़ों से भारी पानी,
कुछ चीज़ों से हल्का पानी,
हल्की चीज़ों को तैराता,
भारी चीज़ें डुबाता पानी।

लेकिन जब प्रदूषित हो जाए तो
बीमारियों को ले आता पानी।
बीमारी से हम बच जाए
अगर साफ रखें हम पानी।

नाव, जहाजों को तैरा कर
मंज़िल तक ले जाता पानी।
चंदा को धरती पर लाकर
जादू-सा दिखलाता पानी।

बच्चों को पानी का पोखर देकर
कागज़ की कश्ती का खेल खिलाता पानी।
स्विमिंग पूल और तालाब भर जाए तो
आई आई एम त्रिची को खुशियां दिलाता पानी।

बिमला देवी
माँ, प्रो. उपम पुष्पक माखेचा

कुछ विचार, विचार करने योग्य

हमारे विचारों का स्तर ही हमारी निजी प्रसन्नता का स्तर निर्धारित करता है।

यदि आंतरिक स्थिति अशांति की होगी तो सभी चीज़ों में गड़बड़ी मालूम पड़ेगी।

सदा प्रसन्न रहने के लिए प्रशंसा की इच्छा का त्याग आवश्यक है।

स्वयं की खोज के लिए स्वयं के प्रति सच्चा बनना पड़ेगा।

हमे सरल होना चाहिए, परन्तु मूर्ख नही।

आपका सद-विवेक आपका अच्छा मित्र है, इसकी बात प्राय: सुनिए।

कुदरत ने हम सबको हीरा तो बनाया है बस शर्त ये है जो घिसेगा, वही चमकेग।

दूसरों के अवगुण न देखना ही सबसे बड़ा त्याग है।

शांति को बहार खोजना व्यर्थ है क्योंकि वह तो आपके गले में पहना हुआ हार है।

विजया. वी
सह – प्राध्यापक

दिल या दिमाग

आदमी ने उड़ाया हवाई जहाज़,
सबसे ऊंचा ढूंढा राज,
सोचा कितना बढ़िया मेरा अंदाज,
मेरा दिमाग सबसे खास ।।

भागा वह बढ़िया तेज,
मिला उसे खाने की चीज़,
अच्छा खाया वह चुपचाप,
नहीं सोचा पुण्य और पाप ।।

आदमी भी दौड़ा बहुत तेज,
करके प्रकृति से क्रांति की आवाज,
सोचा ज्यादा, मुझे और आगे जाना,
इतना काफी ये न माना।।

आदमी तू इतना बढ़िया सुन्दर,
वश में किया जमीन अनन्तर,
सोचा कौन करेगा मेरा काम ?
जननी को ही बनाया गुलाम ।।

मानव में सोच की प्रतिभा बड़ी,
उनकी बुद्धि उनको ही पड़ी,
मत कर तू प्रकृति से हिंसा और पाप,
पड़ेगा तुझ पर इसका भारी अभिशाप ।।

पार्थ शर्मा
पी.जी.सी.बी.ए.ए. 2022-24

मैंने एक शाम संजोह कर रखी है

धुँधली-सी, रंगीन शाम
यादों में जमा कर रखी है,
फ़ुर्सत भरी और लम्बी
एक अरसे से भूली हुई,
सर्दी की धूप-सी कोमल
और सुबह की ठंडी हवा-सी ताज़ी
मैंने एक शाम संजोह कर रखी है।
मद्धम-मद्धम ढ़लते सूरज-सी शाम
समंदर की लहरों-सी कभी न थकने वाली शाम
सुर्ख़ आसमान-सी मुस्कुराती शाम
सब को भूल कर अब में खो जाने वाली शाम
मैंने एक शाम संजोह कर रखी है
मुट्ठी में रेत-सी सरकती शाम
सुबह की पहली किरण तक जागती शाम
रात के अँधेरे में याद
बनकर खो जाने वाली शाम
बरसों पुरानी भूली हुई यादों-सी शाम
मैंने एक शाम संजोह कर रखी है ।

अंकित सिंह
परिवार सदस्य (प्रो० जंगबहादुर सिंह)

हाँ, याद है मुझे

घर की देहरी लाँघकर, गंतव्य की गाँठ बाँधकर
आया हूँ जिसके लिए,
हाँ, याद है मुझे!

माँ का चेहरा यूँ मुरझाना
पीछे मुड़ देख न पाना,
हाँ, याद है मुझे!

यादों का घरौंदा बना
उसे आँसुओं से सींच जाना,
हाँ, याद है मुझे!

कर ली जब बहस-मुबाहिसा
चुभती हैं वो कील-सी
हाँ, याद है मुझे!

अनकही बातों को भी माँ का यूं समझ जाना
बातों ही बातों में नब्ज पकड़ जाना
हाँ, याद है मुझे!

किसको नहीं चाहिए वो घर का प्यार
किसको नहीं पसंद अपनों का साथ
इन तंग गलियों के तंग कमरों ने,
जो दी थी अभिलाषा,
हाँ, याद है मुझे!

खड़े रहे हर वक़्त, हर साथ
वो मेरे हमसाथ
हाँ, याद है मुझे!

डॉ. गौरी संजय राने
पी.जी.बी.सी.ए.ए.2022-24

जिन्दगी

यूं समय जो चल रहा है, मै थम गई हूँ क्यों ?
दिन महीनों में बदले, इतिहास लिख चुके
मैं नि:शब्द खड़ी हूँ क्यों ?
माँ-बेटी-बीवी नहीं, देवी तो बस दुर्गा है,
गीत गाते, सिर झुकाए, भक्ति में विलीन हो क्यों ?
बोझ कंधे पर आज भी महसूस है,
उतारे रखा है जिसे, फिर समेट रही हूँ क्यों ?

अरे बाहर मत कदम रख, रंग रूखा हो जाएगा,
काली अगर हो जाएगी, ना तूझे देखने कोई आएगा।
अच्छा चल संभल कर जाना, दुपट्टा तो लेते जाना,
देहलीज़ जो लांघ रही है तू, इज्जत अपनी उसी में समेटे, जल्दी आना।

अरे! कहा रह गई तू, संध्या जो हो रही है,
मर्यादा का उल्लंघन ना कर, तेरी माँ रूखे आसूँ रो रही है।
चूल्हे पर चढ़ा दे दाल-चावल, छौंक लगाना जरूरी है,
पढ़ाई-लिखाई बस कर दे, सीरत-सूरत सवार यही तेरी मजबूरी है।

जिन्दगी एक बालिका की रह गई तीन अक्षरी है,
उड़ान भरी उन सपनों की, माँ-बाप ने की तस्करी है।
लेन-देन में दे दी, जो एक नन्ही-सी कन्या है,
परिवार समर्पित जीवन अर्पित, परित्याग की ये एक जिंदा व्याख्या है।

कमांडर (रिटायर्ड) सत देव
परिवार सदस्य प्रो. उपम पुष्पक माखेचा

वीर सैनिक

मैं हूँ एक वीर सैनिक, रखना मालिक ध्यान में,
मुझे हमेशा पैदा करना, मेरे हिंदुस्तान में ।

1) ऊँचे - ऊँचे पर्वत इसके, सरोवर प्यारे प्यारे हैं
इसकी नदियों के पानी में, जीवन के मल्हारे हैं।
मैं हूँ छह(6) सिख बटालियन का सैनिक, “आगे कदम” हमारा नारा है।
कैसे सुंदर तेरे ख़ज़ाने बस्ते मेरे प्राण में
मुझे हमेशा पैदा करना, मेरे हिंदुस्तान में।

2) गोरे-काले भोले-भाले, तेरे लोग सुहाते हैं,
मैंने कमांडो डैगर लेकर, इन्हें अंगारों में चलना सिखाया है।
कोई न जाने क्या जादू है, इसकी सरल जुबान में,
मुझे हमेशा पैदा करना, मेरे हिंदुस्तान में।

3) आज का काम न कल पर टालो, कल करना है जो अब कर डालो
यही मेरा पैगाम है।
राष्ट्रभक्ति से नाता जोड़े, हम खुश हैं तेरी शान में
मुझे हमेशा पैदा करना, मेरे हिन्दुस्तान में।
जय हिन्द, जय भारत

अलका शर्मा
परिवार सदस्य, तानिया शर्मा ई.जी.एम.पी

उम्रदराज

उम्रदराज न बनें
उम्र को दराज़ में रख दें
खो जाएं ज़िन्दगी में
मौत का इन्तज़ार न करें
जिनको आना है आए
जिसको जाना है जाए
पर हमें जीना है
ये न भूल जाएं
जिनसे मिलता है प्यार
उनसे ही मिलें बार बार
महफिलों का शौक रखें
दोस्तों से प्यार करें
जो रिश्ते हमें समझ सकें
उन रिश्तों की कद्र करें
बँधे नहीं किसी से भी
ना किसी को बँधने पर
मजबूर करें
दिल से जोड़ें हर रिश्ता
और उन रिश्तों से दिल से जुड़े रहें
हँसना अच्छा होता है
पर अपनों के लिये
रोया भी करें
याद आएं कभी अपने तो
आँखें अपनी नम भी करें
ज़िन्दगी चार दिन की है
तो फिर शिकवे शिकायतें
कम ही करें
उम्र को दराज़ में रख दें

कार्तिक विश्वकर्मा
पी.जी.पी.एम. – एच.आर. 2020-22

समय की शिक्षा

एक किसान के पुश्तैनी मकान के एक कमरे में एक बड़ी पुरानी घड़ी रखी हुई थी। वह 150 वर्षों से बड़ी ईमानदारी से लोगों को अपनी टिक-टिक सुनाती आ रही थी । प्रतिदिन प्रभात होते ही किसान अपनी घड़ी के पास जाकर देखता कि वह ठीक समय दे रही है या नहीं। एक दिन ज्यों ही वह कमरे में दाखिल हुआ, घड़ी बोल उठी : "मुझे लगातार काम करते और ठीक समय देते हुए डेढ़ शताब्दी बीत गये है; मैं अब थक गयी हूँ। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि मैं अब विश्राम करूँ और अपनी टिक-टिक बंद कर दूँ ?"

"पर मेरी अच्छी घड़ी, तुम्हारी यह माँग उचित नहीं," चतुर किसान ने उत्तर दिया, "तुम शायद यह भूल गयी हो कि प्रत्येक टिक-टिक में तुम्हें एक सेकंड का विश्राम मिल जाता है।" घड़ी ने एक क्षण तो सोचा और फिर सदा की भांति अपना काम आरंभ कर दिया।

इस कहानी से यह सिद्ध होता है कि व्यवस्थित कार्य में थकावट और विश्राम समान रूप से साथ-साथ चलते हैं और नियमितता का पालन करने से व्यर्थ के परिश्रम और कष्टों से बचा जा सकता है।

कोविद रंजन
पी.जी.पी.बी.एम. 2014-16

असमंजस

(एक सामाजिक एवं बहादुर महिला पर आधारित)

मैं एक ऐसे परिवार से सम्बन्ध रखती हूँ जहाँ पर स्त्री का स्थान ऊँचा नहीं है। यह समाज पुरुष प्रधान है और यहाँ पर हमेशा से पुरुष की तुलना में स्त्री नीची ही मानी जाती हैं। मेरा भी यही हाल था, मुझे हमेशा मेरे भाई से कम स्थान मिलता था और यह सब मैंने तब से अनुभव किया जब में तीन साल की थी। मेरी माँ हमेशा मेरे भाई पर ज्यादा ध्यान देती थीं। अच्छे कपडे, महंगे खिलौने, आने जाने पर कोई रोक-टोक नहीं, यह सब मेरे भाई के हिस्से में था। मैं मन ममोस कर रह जाती थी। यहाँ तक की भाई को कान्वेंट स्कूल मिला था। देहरादून में, और मैं गवर्नमेंट स्कूल में जाती थी। पर पढाई में मैं हमेशा अव्वल आती थी और भाई फिस्सडी। पर उसकी सब गलतियाँ माफ़ होती थी और मुझे पुरस्कार मिलने पर केवल पिता का बढ़ावा। माँ केवल रिपोर्ट कार्ड देखती थीं। भाई की मौज -मस्ती चलती रहती थी और मैं पुरस्कार पर पुरस्कार इकट्ठा कर रही थी। पिताजी अपने काम मैं व्यस्त रहते थे। पर हाँ मुझे हमेशा प्रोत्साहित करते रहते थे। उन्होंने मुझे पढ़ाई के साधनों में कमी नहीं होने दी।

12 कक्षा में मैं राज्य में मेरिट लिस्ट मैं थी और मेरा भाई औसत नम्बरों से पास हुआ। वह किसी प्रवेश परीक्षा को भी उत्तीर्ण नहीं कर पाया। पर मेधावी होने के कारण मेरा दाखिला AIIMS मैं हो गया और मैं दिल्ली चली गयी। वहाँ भी मुझे स्कालरशिप मिल गयी। भाई को डोनेशन दे कर इंजीनियरिंग कॉलेज मैं दाखिला दिलाया गया। भाई ने वहाँ भी पूरी मौज-मस्ती की और चार साल का कोर्स पांच साल में खत्म किया और एक छोटे से जॉब में लग गया। मेरे भाई का विवाह हमारी कम्युनिटी में ही हुआ और भाभी एक होममेकर थी। उन्होंने एक कन्या को जन्म दिया।

मेरी लाइफ अच्छी चल रही थी। मैं घर में पैसे भी भेजती थी जिसे भाभी इस्तेमाल करती थी।

इस बीच मैंने AIIMS से ही पोस्ट ग्रेजुएशन किया और वहीं पर मुझे स्पेशलिटी वार्ड में स्थान मिल गया। वहीं पर मेरे एक सहपाठी से प्यार हुआ जो की एक पारसी थे । पर मेरे परिवार ने उसे पूरी तरह से नकार दिया।

भाभी काफी नासमझ और छोटी सोच वाली थी। पिताजी के रिटायर्ड होने के बाद माता पिता, भाई के साथ रहने लगे। पर भाभी उनका बिल्कुल ध्यान नहीं रखती थी। मेरा विवाह भी हो गया जिसे मेरे परिवार ने पूरा बायकाट किया। मेरे पति मुझे पूरा सहयोग करते थे। पिताजी चाहते थे कि वे अपनी बेटी के पास चले जाए क्योंकि भाभी उनका अपमान करती थी और ध्यान भी नहीं रखती थी पर माँ के कारण ऐसा नहीं कर पाए। घुट-घुट कर उनका देहांत हो गया। भाई का काम पर ध्यान न देने पर नौकरी चली गयी और फिर मुसीबतें और बढ़ गयी। माँ की सेहत धीरे-धीरे ख़राब हो रही थी। मुझे कहीं से पता चला तो मैं जबरदस्ती माँ को साथ ले आयी। वे एकदम दुबली हो गयी थी और बहू के आचरण ने उन्हें एक दम तोड़ दिया था। घर आने पर मैंने उनका इलाज करवाया और सेहत पर ध्यान दिया। वे एकदम स्वस्थ हो गयी। मेरे पुत्र के साथ भी बहुत हिल मिल गयी। बीच-बीच मैं दुखी हो जाती थी पर अब उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया था। बेटी बेटे से ज्यादा अव्वल होती है। इसी बीच भाई की नौकरी जाने के बाद वह गलत संगत मैं पड़ गया, शराब और गांजे के नशे में धुत रहने लगा। भाभी के भाइयों ने थोड़े दिन सहयोग दिया । कुछ समय बाद भाई का देहांत हो गया भाई की कुसंगति के कारण भाभी अपने भाइयों के पास रहने लगी पर थोड़े दिन बाद उन्हें वहाँ से भी निकाल दिया गया उनकी आदतों के कारण, इसके बाद उनका कोई पता नहीं चला और न माँ ने उन्हें याद किया ।
एक दिन मैं घर पर आयी तो सामने एक फटे पुराने कपड़ों मैं एक स्त्री को देखा जो नीचे फर्श पर बैठी थी, साथ में माँ भी थी। जोर डालने पर पहचान में आया कि यह वही भाभी हैं जिन्हें मैं और माँ दोनों ही भूल चुके हैं। मैं एकदम क्रोध से भर गयी और उन्हें बाहर निकालने वाली ही थी तभी मैंने महसूस किया कि कोई मेरा पल्लू खींच रहा है। मैंने नीचे देखा तो एक मासूम-सी बच्ची अपनी खोयी खोयी आँखों से जैसे बहुत कुछ देख रही थी।

मैं असमंजस में पड़ गयी । मेरा सारा क्रोध जैसे हवा हो गया। मैंने उस मासूम को गोद में ले लिया । वह रोने लगी, सब लोग रोने लगे। मेरी माँ ने मुझे बड़ी आशा से देखा। मैंने बच्ची को गोद में लिया जैसे मेरा पूरा इतिहास गायब हो गया। सारी कड़वाहट घुल गयी। मैंने तुरंत नौकरानी से कह कर उनके स्नान का प्रबन्ध करवाया । कपडे दिए, फटे पुराने कपडे हटवा दिए, भाभी मेरे पैर छूने की कोशिश कर रही थी पर मैंने उन्हें गले लगा लिया। बच्ची फर्श पर बैठ रही थी पर मैंने उसे कर्म (मेरा पुत्र) के साथ बिठाया, कोई भेद भाव नहीं। शाम को पति से भी मुलाकात हो गयी। उन्होंने पूरा समर्थन का आश्वासन दिया। अगले दिन मैंने बच्ची का दाखिला कर्म के स्कूल में करवा दिया।

स्कूल में नाम उसका एकता रखा गया क्योंकि उसी के कारण हम सब एक हुए। एकता मेधावी निकली और आगे उसने IAS क्वालीफाई कर लिया और उत्तराखण्ड़ मैं कलेक्टर बन गयी। उसने उस डिस्ट्रिक्ट मैं लड़का-लड़की भेदभाव उन्मूलन का अभियान चलाया। लड़कियों की शिक्षा पर जोर दिया और सारी लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य हो गयी, उसने इस पर बिल पास कराया। मुझे उस पर गर्व है। उसी ने मेरा असमंजस दूर किया और आज वह लड़की हमारे समाज की मिशाल है।

राजू चौधरी
हिन्दी पर्यवेक्षक

संघर्ष (भाग-1)

संघर्ष नाम से ही आप लोग समझ गये होगें कि मैं किस संघर्ष की बात कर रहा हूँ— हाँ आप बिल्कुल सही समझे हैं मैं जीवन के संघर्ष की बात कर रहा हूँ संघर्ष एक ऐसे लड़के की जो आज भी कहीं न कहीं किसी न किसी जगह हमलोगों के बीच संघर्ष कर रहा है मेरी आप से विनती है कि अगर वो आप को कहीं भी मिल जाये तो आप उसे झुठा ही सही मगर यह आश्वासन दे दीजिएगा कि तुम्हारी नौकरी हो जायेगी मगर तुम संघर्ष करते रहो, संघर्ष न छोड़ना।

चलिए में अब आपको उसके बारे में बतलाता हूँ विकास मेरे बचपन का मित्र। विकास को बचपन में पढ़ाई में मन नहीं लगता था। जब भी उसकी माँ उसे पढ़ने के लिए कहती तो वो तुरन्त अपने दोस्तों के साथ खेलने भाग जाता । जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ उसे पढाई की महत्ता समझ में आने लगी। वह जिस ट्यूसन में पढ़ने जाता वह शिक्षक उसे रोज बुरा भला कहता और उससे यह भी कहता कि तुम कभी पास नहीं होगें। यह बात उसे बहुत बूरी लगती जिन मित्रों ने किसी समय में उसे पढ़ाई से दूर किया था उन्हीं कुछ मित्रों ने उस पर भरोसा जताया और उसे यह विश्वास दिलाया कि तुम भी पढ़ सकते हो शायद उन्हें ऐसा विश्वास था कि विकास मंद बुद्धि नहीं है बस पढ़ाई की तरफ उसका मन नहीं लगता तो तभी से उन लोगों ने उसे खूब पढ़ाया तब क्या था उसे कौन रोकने वाला था उसने माध्यामिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी हासिल करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया, इसीलिए ये मेरा मानना है कि ये खून के रिश्ते से कई उपर होता है मित्रता का रिश्ता। खून का रिश्ता जबर्दस्ती का रिश्ता होता है जिसे न चाहते हुए भी इंसान को निभाना पड़ता है चाहें वह माँ का हो, पिता का, भाई का या फिर बहन का । ये सारे खून के रिश्तें होते है लेकिन हैरानी की बात ये है इन रिश्तों को हम नहीं चुनतें ये सारे रिश्ते हमें कुदरत के द्वारा प्राप्त होते है जिस पर हमारा कोई बस नहीं होता। मगर दोस्ती का रिश्ता एक ऐसा रिश्ता होता है जिसे हम अपनी इच्छा से चुनते है जिसे चुनने का केवल हमारा अधिकार होता है।

विकास मेरा ऐसा ही मित्र था जिसे शायद मैंने ही चुना था। बहुत शांत, सुशील और ईमानदार। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया वैसे-वैसे उसकी पढ़ायी में रुचि बढ़ती गयी। उसकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी इसलिए

वह अपनी पढ़ायी का खर्च निकालने के लिए ट्यूसन पढ़ाना आरम्भ कर दिया इससे वो कभी घर खर्च में अपना योगदान दे दिया करता। विकास की तीन बहने थी और वह अपने माँ-बाप का इकलौता लड़का था। उसके पिता अब काम नहीं कर पाते थे उसके पिता रोज़ एक ही बात उसकी माँ से कहते जिस दिन मेरे बेटे की नौकरी मिल जायेगी उस दिन में काम पर जाना बन्द कर दूगां अब मुझसे इस उम्र में नारियल के पेड़ पर चढ़ा नहीं जाता न ही उतनी आमदनी ही होती है। बिकास का परिवार बहुत बड़ा था और सारे परिवार की जिम्मेवारी उसी के कन्धों पर थी उसके चाचा-चाची उसी के साथ रहते थे उनका भी भरण-पोषण बिकास के पिता ही करते थे इसी कारण पारिवारिक खर्च बहुत ही बढ़ गया था इधर बिकास विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। अख़बार में उसकी फोटो भी छपी जिसे देख वह बड़ा प्रसन्न हुआ। शायद वही उसकी आख़री खुशी थी फिर जिन्दगी ने उसे खुश होने का मौका नहीं दिया।

एक दिन किसी हादसे में उसके चाचा गुजर गये अब उसकी चाची और उनका पाँच साल के लड़के की जिम्मेदारी बिकास पर आ गयी बिकास जो कुछ भी ट्युसन से कमाता सारा पैसा अपनी माँ के हाथों में लाकर रख देता। बिकास ने सोचा ट्युसन से घर नहीं चलने वाली क्योंकि उसके पास ज्यादातर गरीब घर के बच्चें ही पढ़ने आते है अगर वो उनसे जिद्द करके पैसा मागेगा तो कहीं वे पढ़ने आना बंद न कर दे क्योंकि किसी जमाने में बिकास की स्थिति भी कुछ इसी तरह थी एक दिन बचपन में फिस के कारण बिकास अपने एक मित्र के पास पढ़ने चला गया उसका वह मित्र कहीं भी ट्युसन नहीं पढ़ता था क्योंकि उसकी हालत बिकास से भी खराब थी तो बिकास जो भी ट्युसन में पढ़ता या लिखता अपने मित्र को जरुर बताता, जब उसके मित्र ने पूछा की तुम इतनी सुबह-सुबह मेरे घर में क्या कर रहे हो तो उसने उससे कहा चलो आज हम दोनों साथ-साथ पढ़ते है तो उसके मित्र ने कहा –इस वक्त तो तुम्हें ट्युसन में होना चाहिए, तो उसने कहा मेरे पास फिस के पैसे नहीं है अगर मैं बिना फिस लिये गया तो वे मुझे क्लास से बाहार निकाल देगे इसलिए मैंने तय किया है जब तक मुझे फिस नहीं मिलती मैं तुम्हारे पास आकर ही पढ़ूंगा।

उसके बाद उसका मित्र उठा और बाहर चला गया बिकास तब तक सारी किताबें निकाल कर पढ़ने आते थे। इसके थोड़े ही देर बाद उसका मित्र वापस आया और बिकास की सारी किताबें उसकी बैंग में भरने लगा। बिकास ने कहा ये क्या कर रहे हो तुम्हारा मेरे साथ पढ़ने का मन नहीं है तो उसके मित्र ने कहा – मन तो बहुत है पर तुम इस वक्त ट्युसन जाओ और फीस के 300 रुपये उसके जेब में रख दिये तो बिकास ने उससे कहा इतने पैसे तुम्हारे पास कहां से आए तो उसने कहा ये पैसे मुझे मेरे मालिक ने दिये है जिनके यहाँ में अख़बार देने का काम करता हूँ सोचा था इन पैसों से नई चप्पल लूंगा चप्पल पूरी फट-सी गई है पर मुझे अब ऐसा लगता है मुझसे ज्यादा तुम्हें इन पैसो की जरुरत है।

विवेक शरण
ई.डी.पी.एम. – 2022-27

अनुपात

आँसू से भरी आँखें, गुस्से से लाल चेहरा, पलक झपकी और आँसू फर्श पर गिरे। कबीर बिना एक शब्द बोले सिपाहियों के साथ अदालत से बहार चला गया। सज़ा थी 20 साल का कारावास। एक ही अदालत में एक ही साथ दो तरह के आंसू छलक रहे थे। एक तरफ मातम के आंसू बहा रहे थे, तो दूसरी तरफ खुशी फूले नहीं समा रही थी। एक इंसान दूसरे इंसान की ज़िन्दगी के 20 साल ख़त्म होते देख खुशियाँ माना रहा था। इंसानियत और हैवानियत अदालत के उस कक्ष में जैसे मिश्री में ज़हर के जैसे घुल चुकी थी और बताना मुश्किल हो रहा था कि कौन इंसान है और कौन हैवान ? इंसानों और हैवानों के इस महफ़िल में भगवान बने न्यायाधीश ने भी कानून के अंधे होने का पुख्ता प्रमाण दिया।

कबीर 21 वर्ष का एक प्रतिभाशाली नवयुवक था। अपने कॉलेज में स्वर्ण पदक विजेता और बहुमुखी प्रतिभा वाला। उसकी बस एक ही बुराई थी और वो था उसका गुस्सा। कबीर के जन्म के ३ साल बाद ही उसके माता-पिता का तलाक हो गया। इतनी छोटी उम्र में ही अदालत के धक्के खाने पड़े और मुक़दमे के अंत में अदालत ने कबीर को उसकी माँ को सौंपा। कबीर की माँ बच्चे को अकेले पालने में असमर्थ थी और उसने कबीर को ४ साल की उम्र में ही अपने भाई को सौंप दिया। कबीर के मामा को कोई संतान न होने की वजह से उन्होंने पहले तो बड़े मन से कबीर को साथ में रखा लेकिन कुछ दिनों में ही बच्चे की ज़िम्मेदारी उठाने से तंग आ गए और छोटी- छोटी बातों पे चिल्लाना, चीखना, पीटना और भला-बुरा बोलना शुरू कर दिया। कबीर को कभी भी किसी का प्यार नहीं मिला। वो अकेला रहने लगा। स्कूल में दूसरे बच्चे उसे परेशान करते थे। घर में मामा-मामी कोसते थे । कबीर जैसे बड़ा हुआ पूरी दुनिया के प्रती उसका गुस्सा बढ़ता गया।

कबीर का बस एक ही दोस्त था, उसका कुत्ता 'किट्टू' जो कबीर को सड़क के किनारे एक गंभीर हालत में मिला था। कबीर की तरह ही किट्टू भी अनाथ था। कबीर ने किट्टू को बड़े प्यार से पाला था। कबीर अपनी सारी बातें किट्टू को बताता था। कबीर और किट्टू की जोड़ी सारे मोहल्ले में प्रचलित होने लगी। कॉलोनी के बदमाश लड़के कबीर को अब कुत्ते का दोस्त कुत्ता बुलाने लगे थे। कबीर कोशिश करता था कि इन बातों पर ध्यान ना दें। बहुत मुश्किल से वो अपने गुस्से को नियंत्रित करता था। स्कूल और कॉलेज में जब बाकी के विद्यार्थी उसे चिढ़ाने लगे तो कबीर ने अपने शिक्षक से उन लड़कों की शिकायत की लेकिन शिक्षक ने कोई सुनवाई नहीं की। एक बार मुहल्ले के कुछ बदमाश लड़कों ने किट्टू के खाने में चूहे मारने की दवा डाल दी। खाने के बाद किट्टू वहीं गिर पड़ा और उसके मुँह से सफ़ेद झाग निकलने लगा। ये देख कबीर दोड़कर किट्टू को अस्पताल ले गया और किसी तरह उसकी जान बचाई। कबीर को बहुत गुस्सा आया। बाद में उसे पता चला की यह करतूत राघवन की थी। राघवन, एक अमीर माँ बाप की बिगड़ी हुई औलाद था। कबीर ने पास के थाने में शिकायत करने की कोशिश की लेकिन दरोगा ने उसे थाने से बुरा भला कह के भगा दिया।

कबीर का कॉलेज घर के पास ही था। कभी वो किट्टू को अपने साथ कॉलेज तक ले जाता था। एक दिन कॉलेज से लौटते समय कबीर ने देखा की किट्टू कॉलेज के दरवाज़े पर उसका इंतज़ार कर रहा था। उस दिन किट्टू को राघवन ने काफी परेशान किया था। राघवन से बच के किट्टू कबीर के कॉलेज के पास आया था। कबीर ये बात समझ गया। दोनों कॉलेज से साथ में लौटने लगे। जब वो अपने कॉलोनी पहुंचे तो किट्टू थोड़ा पीछे चल हा था और कबीर आगे। अचानक एक घड़ाम-सी आवाज़ हुई। कबीर ने पीछे मुड़ कर देखा। एक बड़े पत्थर से किट्टू का सिर कुचला हुआ था। कबीर भागता हुआ किट्टू के पास गया। किट्टू की पूँछ अभी भी हिल रही थी। कबीर ने किट्टू के पेट पर अपना हाथ रखा और किट्टू ने अपनी आखिरी साँस ली। कबीर का गला रुंध गया लेकिन उसके आंसू नहीं गिरे। कबीर ने किट्टू के सिर से पत्थर हटाया और किट्टू को अपनी गोद में उठा कर पूरे रीति-रिवाज़ के साथ उसका अंतिम संस्कार किया। कबीर फिर से अकेला हो गया था। कबीर की समझ में ये नहीं आ रहा था कि लोग उससे आखिर नफरत क्यों करते हैं? आखिर उसकी गलती ही क्या थी? क्या उसका जन्म लेना उसकी गलती थी ? या उसके माता-पिता का तलाक लेना उसकी गलती थी। क्या अपने मामा-मामी पे भरोसा करना उसकी गलती थी या स्कूल कॉलेज के शिक्षकों को अपनी परेशानी बताना उसकी गलती थी। क्या पुलिस पें विश्वास करना उसकी गलती थी या एक मूक जानवर को पालना उसकी गलती थी। ज़िन्दगी उसकी समझ से बाहर हो चुकी थी।

कुछ दिन बाद, जिस जगह पें किट्टू के ऊपर पत्थर गिरा था उसी जगह पे राघवन की लाश मिली। उसका सिर भी किट्टू की तरह ही कुचला मिला। पत्थर भी वही था। किट्टू और राघवन के खून का साक्षी वो बड़ा पत्थर था। कुछ ही घंटे में पुलिस आई और कबीर को पकड़ के ले गई। सरकारी वकील ने एक मनगढंत कहानी बनाई। सरकारी वकील की दलील ये थी कि कबीर बचपन से ही गुस्से वाला था। कबीर अहंकारी था इसीलिए वो किसी से बात नहीं करता था और पूरे साज़िश के साथ किट्टू का बदला लेने के लिए कबीर ने राघवन को मार डाला। थाने के उस दरोगे को जिसने कबीर को एक बार भगाया था अब कबीर को ही पकड़ने पर उसे पदोन्नति और पदक मिला। न्यायाधीश साहेब को एक खूनी को सज़ा सुनाने पर वाहवाही मिली। कबीर को 20 साल का कारावास और राघवन के परिवार वालों को सामाजिक स्तर का तथाकथित न्याय मिला।

समय बीतता गया, कबीर ने जेल में भी पढाई की और काफी किताबें लिखी। 41 वर्ष की उम्र में कबीर जेल से छूटा। जेल से छूटने के बाद भी कबीर की परेशानियां कम नहीं हुई। जीवन से तंग आकर कबीर ने संन्यास ले लिया और बाकी के 30 साल कबीर ने बनारस में साधु बन कर निकाले। प्रतिदिन की तरह शाम में पूजा पाठ के बाद रात में हल्का भोजन कर कबीर अपने बिस्तर पे लेटा और जल्दी ही उसे गहरी नींद लग गई। जब आँखें खुलीं तो कबीर अचंभित हो गया। 50 साल पुरानी वही अदालत में अपने को पाया। उस समय के सभी लोग वहाँ मौजूद थे। राघवन जिसने किट्टू को मारा था, न्यायाधीश, दरोगा, किट्टू, मामा, मामी, माता, पिता, शिक्षक, सरकारी वकील सब लोग एक बड़े कटघरे में खड़े थे। लेकिन आज न्यायधीश की जगह "चित्रगुप्त" बैठे थे और "यमराज" अदालत की कार्यवाही कर रहे थे। चित्रगुप्त ने यमराज को सारी दलीलें सुनाई और अपना फैसला ऐसा सुनाया :

1. न्यायाधीश: 10%
2. कबीर के पिता: 10%
3. कबीर की माता: 10%
4. राघवन के पिता : 10%
5. राघवन की माता: 10%

6. शिक्षक: 10%
7. दरोगा: 10%
8. मामा: 10%
9. मामी: 10 ०%
10. सरकारी वकील: 10%

कुल: 100%

अन्य:

कबीर : 0%

राघवन : 0%

फिर न्यायाधीश की जगह पे विराजमान और ब्रम्हा के पुत्र चित्रगुप्त ने ये कहा:

मनुष्य का दुर्लभ जीवन 84 लाख योनियों के बाद बड़े परिश्रम के पश्चात् मिलता है। पृथ्वी लोक में राघवन ने किट्टू को मारा और कबीर ने राघवन को। ये दोनो घंटनाएँ इसलिए घटित हुईं क्योंकि जिन लोगों को कबीर और राघवन का उत्तरदायित्व दिया गया उन्होंने अपने कर्तव्यों का पालन सही से नहीं किया। कबीर और राघवन दोनो निर्दोष हैं। परन्तु जिन लोगों की वजह से दुर्लभ मनुष्य योनि के 20 वर्ष कबीर ने गवाएं उन सबको इस अपराध में उनकी भागीदारी के **"अनुपात"** में सजा कटनी पड़ेगी। सज़ा निर्धारण का सूत्र ये होगा : 84 लाख x 20% x अनुपात। इस सूत्र से न्यायाधीश को 84 लाख x 20% x 10% अर्थात 1,68,000 (एक लाख अड़सठ हज़ार) जन्म का कारावास दिया जाता है।

3

चित्रगुप्त ने अदालत बर्खास्त करने और अंतर्ध्यान होने से पहले अंत में ये कहा :

मनुष्य की बनाई न्यायपद्धति अल्पदर्शी है। मैं जानता हूँ कि मनुष्य अपने पूर्व जन्मों को याद नहीं रख सकता लेकिन जन्म उपरांत मनुष्य के हर कर्म में बहुत से लोगों की भागीदारी होती है। अगर किसी मनुष्य से कोई अपराध होता है तो इसमें पूरे समाज की भागीदारी होती है और सज़ा हर उस व्यक्ति को मिलनी चाहिए जो उस अपराधी से जुड़ा है। बुद्धिहीन मनुष्य इस साधारण बात को नहीं समझते की सारे जीव-जंतु, पेड़-पौधे और सभी मनुष्य जीवन एक अदृश्य सूत्र से बंधे हैं। सभी चल और अचल एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं। प्रकृति के नियमानुसार अच्छे और बुरे कर्मो का फल जिसकी जितनी भागीदारी है उसके हिंसाब से अपने आप ही बंट जायेगी।

इस नियम के अनुसार छोटे और बड़े हर कर्मों के फल को भुगतना इंसान को पड़ेगा और इस नियम को ही कहते हैं "अनुपात"!!

सुमित बनर्जी
डी.पी.एम, शोधार्थी

घाट बनारस

"इस्स..." की आवाज़ के साथ वैदेही ने माचिस जलाई और कमरे के अंधकार में माचिस की आभा में उसका चेहरा दीप्तिमान् हो उठा। एक पल तो ऐसा था जब राघव को उसका चेहरा छोड़ और कुछ दिख ही नहीं रहा था। वैदेही ने माचिस से लालटेन की बाती को जलाया और पूरा कमरा उसके बसंती रोशनी से नहा गया। वैदेही ने उस पर शीशे की चिमनी डाली, जो सतत इस्तेमाल से थोड़ी स्याह हो चली थी।

राघव ने कहा, "लाइट वापस आती है तो चिमनी साफ कर देता हूँ।"

"आराम से करना", वैदेही ने कहा, "पिछली बार तुमने जल्दी कर दी थी, और पानी पड़ते ही वो चटक गई थी। एक्सट्रा खर्चा नहीं करना है।"

राघव वैदेही की इस बात पर उसकी तरफ़ दो पल टकटकी लगा कर देखता रहा।

"क्या? मैं बस आगाह कर रही थी। अगले महीने दिल्ली जाना हुआ तो टिकट के खर्चे हो सकते हैं, इसीलिए बोल रही थी।"

"जी, मेम साहब।" राघव ने इस तर्क को सही मानते हुए वैदेही को सलाम ठोक दिया।

राघव और वैदेही को थोड़ा ही अरसा हुआ था बनारस आए हुए। बिजली ने तो रस्म बना ली थी हर शाम को मुंह चुराने की। अगर शाम को ठंडी हवा बहती तो ये छत पर हवा खा लेते थे। नहीं तो इन्होंने भी संध्या तिमिर को आत्मसात करते हुए शाम को कहीं बाहर जाने का कार्यक्रम बना लिया था। कभी शहर के गोदौलिया बाज़ार में, कभी घाट पर, और कभी बस गली का छोटा चक्कर ही लगा लिया और नुक्कड़ पर मलाई वाली लस्सी पी लिया।

आज शाम को भी वही हाल था। बिजली चली गयी थी, और बनारस की गर्मी घर में बैठे रहने की चेष्टा पर अपनी अस्वीकृति प्रस्तुत कर रही थी। हार कर दोनों जन ने घाट की ओर जाने का सोचा। लालटेन की बाती को नीचे कर, किवाड़ को ताला मार कर दोनों पैदल निकल लिए घाट की ओर।

सामान्यतः ये दोनों दशाश्वमेध घाट पर ही जाकर समय बिताते थे। आज थोड़े से बदलाव की इच्छा कर ललिता घाट की तरफ कदम बढ़ा दिये। माँ गंगा के तीरे चलते-चलते दोनों करीब दस मिनट बाद जाकर ललिता घाट पहुँचे। घाट पर एक साफ़-सुथरी जगह देख कर दोनों बैठ गए।

शाम तो हो ही चुकी थी। गंगा जी की तरफ़ से ठंडी हवा आकार इनके चेहरों को सहला रही थी। कभी-कभी उस बयार में दिन भर की ऊष्मा भी गंगा जी अपने आशीर्वाद की तरह भेज रही थी। मगर जो भी था, यहाँ होना घर की गर्मी झेलने से बेहतर ही था।

बैठे-बैठे दोनों आस-पास के नज़ारे देख रहे थे। मणिकर्णिका घाट के महा शमशान की चिताएँ एक अद्भुत वैषम्य बना रही थी बिजली जाने कारण हुए अंधेरे से। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह धधकती आग आस-पास की कालिमा को चीर कर सब को अपनी ओर सम्मोहित कर रही थी। दोनों शांति से एकटक उधर देखते रहे। कितनी देर, ये किसी को नहीं पता। समय मानो थम सा गया था।

"जो आज चला गया वो कितना कुछ अपने में समेटे चला गया ना? कितनी आकांक्षाएँ, कितने दुःख, कितने अरमान...खुद के लिए, अपने पति-पत्नी के लिए, अपने बच्चों के लिए।" वैदेही अनायास ही बोल पड़ी।

राघव ने वैदेही को देखा मगर वो अभी भी उन जलती चिताओं को देखे जा रही थी। कभी-कभी वह इतनी गूढ़ बातें कर के राघव को अचंभित कर देती।

"उसने शायद कुछ प्लान कर रखा होगा ना? कि कल कुछ करना है। जब बच्चे बड़े हो जाएंगे तो शायद दोनों पति-पत्नी कहीं घूमने जाएंगे। शायद ऐसा कुछ करते जो सिर्फ उसकी हसरत बन के रह गयी आज।" राघव ने भी उस विषय पर अपनी बात जोड़ दी।

"सोचो, तुम्हें पता लगे की तुम कल मरने वाले हो तो आज क्या करोगे?"

"अरे शुभ-शुभ बोलो भाग्यवान! इतनी जल्दी पीछा नहीं छूटे..." राघव बोलते-बोलते रुक गया।

वह सोचने लगा कि क्या गारंटी है कि वह कल मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा। इसकी भी क्या गारंटी है कि कल का सूरज वह देख सकेगा।

"क्या सोचने लगे? मुझे अगर पता हो तो मैं आज का हर लम्हा तुम्हारे साथ बिताऊँगी। और तुम्हारी पसंद की सारी चीज़ें बना के खिलाऊंगी।" वैदेही ने मुसकुराते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता मैं क्या करूँगा?" राघव ने सोचते हुए कहा। "शायद मैं तुमसे वो सारी बातें करूँगा, जो मैंने आज तक नहीं की। वो सब कि मैं तुम्हें कितना खुश देखना चाहता हूँ। शायद ये भी की मुझे तुममें क्या नुक्स दिखाई देते हैं।"

"नुक्स?! मुझ में?" तनी भृकुटियों के साथ वैदेही ने पूछा - मगर उसकी शरारती मुस्कान साफ़ बता रही थी कि वो राघव के साथ हंसी कर रही थी।

"कितना कुछ मैं छोड़ जाऊंगा, यार! क्या मैं बस अपने लिए ही जी कर चला जाऊंगा? क्या मुझे दुनिया को कुछ वापस नहीं करना चाहिए? शायद कुछ पैसे अनाथालय को दे दूँ, शायद कुछ हज़ार पेड़ों के लिए दान कर दूँ, शायद किसी वांछित तबके के लिए कुछ कर दूँ।"

राघव बोलता रहा। "और अगर मैं ये सब कर भी देता हूँ तो कितना ही फ़ायदा हो जाएगा इनको? मैं खुद नहीं जानता की मेरा महत्व क्या है इस दुनिया में, मैं क्या कुछ कर लूँगा?"

"अगर बहुत कुछ नहीं कर सकते तो थोड़ा भी नहीं करना उचित है क्या? हम ये क्यों देखें की कितना बड़ा बदलाव ला रहे हैं? क्या इतना देखना काफ़ी नहीं कि हम बदलाव कर रहे हैं, चाहे जितना भी छोटा हो।" वैदेही ने अपने हिसाब से अपना वक्तव्य दिया।

"बात तो सही कह रही हो।"

"सिर्फ इतना ही नहीं तुम्हें ये भी सोचना चाहिए...तुम्हें क्या, मुझे भी ये सोचना चाहिए की अगर ये सब अंत में करना ही है तो मरने की भविष्यवाणी की प्रतीक्षा क्यों करना। ये सब हम आज ही क्यों ना कर लें?"

राघव कुछ देर तक सोचता रहा, कोशिश करता रहा कि इन सवालों के बादलों में से छन कर कोई रोशनी की किरण आए। वैदेही ने भी सोचा कि अभी इसे टोकना सही नहीं होगा। वह भी अब सामने नज़रें दौड़ाने लगी। नाँव में बैठे सैलानी घाट दर्शन कर रहे थे। घाट पर फ़ेरी वाले अपने समान के लिए आवाज़ दे रहे थे। पास एक बच्चा अपने माता-पिता से एक फ़ेरी वाले से बुड्ढी के बाल दिलाने का हठ कर रहा था। इतने में ही घाट पर लगी बत्तियाँ जगमगा उठी।

"चलो, बिजली आ गयी। घर चलते हैं, खाना बनाना है।" कहकर वैदेही उठने लगी।

"नहीं।" राघव ने उसका हाथ थाम कर वापस नीचे बैठने का इशारा किया। "खाना बाहर खा लेंगे। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"

"नुक्स बताने हैं तो रहने दो।"

"वो भी करना है, लेकिन ढेर सारी और बातें करनी हैं। जिन्हें आज नहीं किया तो शायद कल देर हो जाए।"

वैदेही वापस राघव के पास बैठ गयी। दोनों आपस में बात करने लगे। पीछे फ़ेरी वाले की हांक और बच्चों की ज़िद अब पार्श्व ध्वनि में विलीन हो गयी थी। अब गंगा जी से आती बयार शीतल हो चली थी। बनारस के घाट पर आज शायद इनको मुक्ति ना मिली हो, मगर जीवन यापन करने का एक नया दृष्टिकोण अवश्य मिल गया था।

अंकित सिंह
परिवार सदस्य, प्रो. जंगबहादुर सिंह

दिल्ली दरबार

दिल्ली कहने को तो हमारे देश की राजधानी है परंतु इसी राजधानी में कितने ही युवक, युवतियाँ अपने राजयोग की इच्छा, आकांक्षा लिये यहाँ आते हैं। इसी कड़ी में जुड़ने के लिए मैं भी अपने सपनों के प्रथम पृष्ठ को मूर्त रूप देने के लिए 'इंद्रप्रस्थ' की ओर प्रस्थान हुआ ।

अतीत की अगर बात की जाए तो मेरा 'मेट्रो' शहरों से पहले कभी कोई ताल्लुक़ात नहीं रहा था। प्रयागराज में कभी 'पूरब का ऑक्सफ़ोर्ड' कही जाने वाली सुप्रसिद्ध एवं अपने राजनैतिक क्षमताओं का लोहा मनवाने वाली इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्चत्तर शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत प्रशासनिक सेवा की तैयारी के लिए पहली बार किसी मेट्रो शहर में आगमन हुआ।

मेट्रो शहरों की छवि चलचित्रों, दूरदर्शन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों में जो समाहित थी; दिल्ली प्रथम दृष्टया उसे हुबहु मानवीकृत कर रही थी। दिल्ली स्टेशन पर रेलगाड़ी से उतरते ही हवा की पहली झोंक ने ही अंदर से झंकझोर दिया था। शायद वायु की स्पर्श ये कहने को तैयार थी कि यहाँ आपको हवा, पानी और शुद्ध वातावरण तीनों में विभेद करने का पूर्ण अवसर मिलेगा। पाँच इन्द्रियों में से पहले ने तो 'लिटमस परीक्षण' पास कर लिया था या यूँ कहिये की 'अडजस्ट' कर लिया था। अगली बारी श्रवानेंद्रियों की थी; जिस श्रवानेंद्रियों ने संगम तट पर गंगा जी की आरती में तल्लीन होकर ढ़ोल एवं भजन का अद्भुत संगम महसूस किया था। आज उनका राजधानी की कर्कश ध्वनियों में समायोजित होने की 'प्रारंभिक' चरण भर मात्र थी। इन्हें आज ये पहला चरण पार करके अगले चरण की तैयारी में हाल-बेहाल होकर लगना ही था। दूसरा और कोई उपाय भी इस शहर में नहीं था। विडंबना भी यही कि सारे राज्यों को उपाय प्रेषित करने वाला ये 'केंद्र बिंदू' भी 'बंगले झाँकने' को मज़बूर है।

ख़ैर, थोड़ा बहुत सामंजस्य स्थापित करने के पश्चात टेम्पो की पहली हॉर्न और ऊँचे महत्वपूर्ण भवनों की पहली झलक ने तीसरी और महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्री - आँखों को भी अपनी मनमर्जी का पूरा मौका दे दिया। जितने राष्ट्रीय स्मारक, सरकारी भवन, ऐतिहासिक जगह, महत्वपूर्ण और स्त्रातेजिक भवन जो कभी सामान्य ज्ञान एवं इतिहास की किताबों में पढ़ा और देखा था; आज उन्हीं को साक्षात देख कर मन प्रफुल्लित और जिज्ञासु हो उठा था। अपनी इस उत्कंठा को थोड़ा सहज बना ही पाया था कि गंतव्य सामने था- 'पटेल नगर'। नाम से ही मालूम पड़ता है कि इस नगर का नामकरण हमारे 'लौह पुरुष' श्री वल्लभभाई पटेल से प्रेरित था। कहने को तो प्रतिभागी इसे 'मक्का ऑफ एस्पिरेंट्स' (ख़ासकर सिविल सेवाओं के लिए) भी कहते हैं किंतु भाषाई विभाजन के फलस्वरुप मुखर्जी नगर को ही प्रथम एवम अंतिम संज्ञा दी गयी है। दूर-दूर तक नज़र दौड़ाने पर केवल बड़े-बड़े होर्डिंग्स पर रूम ऑन रेन्ट, पी.जी. बॉयस, गर्ल्स, 24×7 लाइब्रेरी, सचिन तेंदुलकर टिफ़िन सर्विसेस, गोल्ड जिम आदि इत्यादि यही नाम चहुँओर व्याप्त था। आस पास के खाली ख़ड़े 'भारतीय पनवाड़ी समाज', जो टकटकी लगाए मानो इशारों ही इशारों में आपको आपकी मंजिल तक धकेल कर पहुचाने को आतुर हो। उन्हीं में सबसे प्रौढ़ सदस्य से 'कॉन्वो' करने के बाद मालूम चला कि यहाँ 'नॉक नॉक, अंकल जी रूम है' की सुविधा

नहीं बल्कि जेब हल्की करके वॉक-टॉक करने की थी। थोड़ी वॉकिंग, थोड़ी टॉकिंग के बाद एक गली के दूसरे कोने में तीसरी मंज़िल पर चौथी बार में वह कमरा पसंद आया और भला आता भी क्यों न, कमर और धीरज दोनों जवाब दे चुके थे।

अगली सुबह कब हुई इसका अंदाज़ा घड़ी की सुइयों से ही पता चल पाया क्योंकि भास्कर की लालिमा धरातल पर स्पर्श कर सके ऐसा मानव जीव ने उचित न समझा था। बेतरतीब ढंग से खड़ी इमारतें, दो विपरीत दिशाओं से मानो आलिंगन को बेताब हों, उनके बीचो-बीच संकरी गली इन दोनों जोड़ों के बीच फाँस मालूम पड़ती है। ख़ैर, क्योंकि जिस संस्थान की मेंटरशिप के लिए इतनी दूरी तय की थी; उसके दाखिले में थोड़ा समय शेष था तो कुछ मित्रों की सलाह पर मेट्रो की सवारी एवं संस्थान का प्रथम चक्कर लगाने का तत्क्षण प्लान बना। दिल्ली नाम से ही संसद भवन, राष्ट्रपति भवन, इंडिया गेट के बाद अगला नाम ज़ुबानी तौर पर मेट्रो का ही रहता है। खुद को अभी कम स्मार्ट समझते हुए 'स्मार्टकार्ड' के प्रयोग से अनभिज्ञ, टोकन लेकर सुरक्षा जांच के लिए लाइन में सावधान मुद्रा में स्थापित हो गये। स्वचालित सीढ़ियों से लेकर स्वचालित मेट्रो गेट तक सारी प्रक्रिया निर्विघ्न रही। समस्या तो मेट्रो 'डिबोर्ड' करने के बाद हुई; जब दस मिनट की राइड ने ही 'जेट लैग' जैसा फ़ील दे दिया हो। तभी समझ आ गया कि अभी 'सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट' यानि मस्तिष्क ने भी मेट्रो शहर में पहुँच जाने को प्रोसेस नही किया था, अभी भी वह प्रयागराज स्थित लेटे हनुमान जी की भांति आलस्य मुद्रा में विश्रामाधीन है।

ख़ैर, इसी उधेड़ - बुन और नव-शहर में समायोजन स्थापित करने के बाद वो घड़ी जिसकी प्रतीक्षा प्रतियोगी छात्र महकमें में सबसे ज़्यादा रहता है- एक नामी गिरामी,स्वघोषित नंबर वन आईएएस इंस्टिट्यूट में दाखिला लेना; उसका समय घड़ी की सुइयों के ठीक नौ बजते ही शुरू हो चुका था। और इसके साथ ही शुरू हो चुका थी-प्रशासन और शासन तक पहुँचने की पहली सीढ़ी। जितने कम समय में 'सीट फुल' का पॉप अप नोटिफिकेशन आया, उतने कम समय में शायद कॉर्न भी पॉपकॉर्न में रूपांतरित न हो। दाखिले के ऑनलाइन माध्यम से ही आगे लगने वाली लाइन का अंदाज़ा हो गया था। और तो और इस संस्थान में दाखिला हो जाने का जो जिज्ञासा कम दवाब ज्यादा था, शायद अपनी पहली पोस्टिंग के पहले तहसील दिवस पर भी न हो। सारे काग़ज़ी कार्यवाही के बाद दाखिला पूर्ण होने के पश्चात अब मिशन पर लगने की बारी थी।

संस्थान की पहली क्लास वहाँ के निदेशक द्वारा ओरिएंटेशन क्लास के नाम से प्रचलित थी। तारीख मिलने के बाद जिस तरह मुवक्किल और वकील पूरी तैयारी के साथ न्याय के चौखट पर जाते हैं, ठीक उसी प्रकार डेट मिलने पर मैं भी अप टू डेट होकर क्लास लेने संस्थान पहुंचा। दूर से घुमावदार, जलेबीनुमा लाइन दिखाई पड़ी। सहसा ही मुझे लगा, कोई अच्छी पिक्चर कहीं आस पास किसी सिनेमा घर में प्रदर्शित हो रही होगी या आई फ़ोन सेल डे चल रहा होगा। पास पहुँचने पर पूरी पिक्चर क्लियर हुई कि सभी भावी प्रशासनिक अधिकारी हैं जिन्होंने अभी से ही समय से पूर्व पहुँचने और व्यवस्था में शरीक होने का दावा ठोक दिया था। किसी के कानों में बॉस हेड्स, कोई गुच्ची का चमचमाता जैकेट, कोई द हिन्दू अख़बार को पढ़ने के बाद उसी को आसन बना कर जगह रोकने की आदि काल परंपरा को आगे बढ़ा रहा था। क्लास में एंट्री के बाद, अब अगली जद्दोजहद थी सीट पाने की, वो भी अग्रिम पंक्ति की। सीट हथियाने की, जिसकी ट्रेनिंग हम भारतीयों को ख़ासकर उत्तरी क्षेत्र निवासियों को बाल्यावस्था में हो जाती है,उसका आज धरातल पर टेस्ट था। अनुकूल जगह पर विराजमान होने के बाद सर् की एंट्री ने माहौल को और संजीदा एवं और व्यवस्थित बना दिया था। 'हेलो स्टूडेंट्स, वेलकम टू आवर इंस्टिट्यूट' की उदघोषणा ने 600-700 की 'भीड़' जो कि एक हॉल में अपने हाल पर बन्द थी,को पूरी तरीके से सजग कर दिया था। सभी अपने पेन-कॉपी जो कि नव दंपति की भांति इठला रहे थे मानो 'डिफेंसिव से ऑफ़ेंसिव' की मुद्रा में आ गए थे। इस सेवा अर्थात भारतीय प्रशासनिक सेवा के तमाम बिंदुओं को आलेखित करने के उपरांत सर् ने पेप टॉक से अपनी वाणी को विराम दिया जो कि इस प्रकार थे- " तुम याद रखना वही अविरल चट्टान ही मयूर सिंहासन बनता है जो संघर्ष पथ पर दृढ़ता के साथ डटा रहता है,और अंत में तुम्हारी विजय की शंखनाद हर दिशा में गूँजेगी"

इन्ही चार लाइनों के साथ सर की क्लास समाप्त और मेरी दिल्ली के दरबार में संघर्ष यात्रा की शुरुआत हो चुकी थी।

डॉ. एलिजाबेथ वर्षा पॉल
पुत्री, सुरेश पॉल एंटनी

मीठा बदला लेने के लिए एक नयी अभिलाषा और कौशल

लॉकडाउन के दौरान मेरे पिताजी बाल कटवाने के लिए सैलून जाने की जिद्द कर रहे थे। मैं सोची कि मैं उनसे मीठा बदला लूगी । जब मैं छोटी थी तब मेरे पिताजी ने मेरे बाल काटे और उन्होंने उदारता से मेरे कान का एक टुकड़ा भी काट दिया! मैं इतनी फूट-फूट कर रोयी कि मेरे पड़ोसी मेरे बचाव में आ गए। तो यह मेरे लिए सुनहरा अवसर था। वह घबराये हुए थे और उन्होंने कांपते स्वर में मुझसे कहा -"वर्षा, मेरे खराब कानों से सावधान रहना।" बहुत उम्मीद के साथ मैंने उनके बाल काटने शुरू कर दिए। मैं मुस्कुरा रही थी । मैंने बाएं कोने से शुरू किया और धीरे-धीरे दाईं ओर चली आयी। मैं सफल रही लेकिन मेरे पिताजी नाखुश थे। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें एक सैन्य कटौती की जरूरत है। सैलून में जाने के मेरे अनुभव ने आखिरकार मेरी मदद की। मैंने उनके अनचाहे बालों के धागों पर पानी छिड़का और वे अंत में मेरे कैंची के चपेट में आ गए। मेरे पिताजी खुशी से झूम उठे। अब मैं आधिकारिक हेयर स्टाइलिस्ट हूँ - अपने माता-पिता के बालों को काटने और उनकी रंगाई के लिए।

डॉ. एलिजाबेथ वर्षा पॉल
पुत्री, सुरेश पॉल एंटनी

स्वर्ग से एक यमदुत

मैंने अपने जीवन में एक देवदूत भी देखा या यूं कहे कि दिखाई दिया। यह तब हुआ जब मैं छोटा था। यह वह समय था जब कोई डिजिटल भुगतान की सेवाएं नहीं थी और न ही कोई मोबाइल सेवाएं ही उपलब्ध थीं।

दोपहर का समय था, मैंने और मेरी माँ ने मेले में जाने का फैसला किया। मेला मेरे घर से बहुत दूर था, मान लीजिए लगभग 15 किलोमीटर। चूँकि मैं बाहर घूमने के लिए उत्साहित था, मैं अपनी माँ से जल्दी कपड़े पहनने की जिद्द कह रहा था। जल्दबाजी में उसने थोड़े ही पैसे लिए थे। खरीदारी के दौरान, उसने महसूस किया कि उसके पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं और इसलिए उसने एटीएम मशीन से पैसे निकालने का फैसला किया। मशीन में उस समय पैसे भी उपलब्ध नहीं थे। घर जाने में देरी होने के कारण मेरी माँ विचलित हो रही थी। इस तनावपूर्ण क्षण में, नीली आंखों वाला सफेद कुर्ता पहने एक व्यक्ति आया। मुझे उसके सिर से एक प्रभामंडल आता हुआ दिखाई दे रहा था। उन्होंने धैर्यपूर्वक स्थिति के बारे में पूछताछ की, और फिर उन्होंने विनम्र स्वर में कहा "चिंता मत करो। मैं यहां आपकी सहायता के लिए आया हूँ। उन्होंने काफी मशक्कत की मशीन को ठीक करने की पर वे असफल रहे, तो मेरी मां फिर तनाव में आ गई और उसने मेरी तरफ देखा और जोर से बोली, "यह तुमने क्या किया- वर्षा?"। उन्होंने उनसे कहा कि मुझे डांटे नहीं और इसके बदले में उन्होंने अपनी जेब से 1000 रुपये निकाल कर हमें दिए, हम हैरान थे। उन्होंने हमें बताया कि वह एक बैंक शाखा के प्रबन्धक है और इसलिए यह उनका कर्तव्य है इस दौरान उन्होंने अपना नाम और संपर्क विवरण हमें दिया।

मेरे पिताजी चिंतित थे क्योंकि शाम के 7 बज रहे थे और हम अभी तक मेले से घर नहीं लोटे थे। थोड़ी देर बाद हमें बस मिली और हम सकुशल घर पहुँच गए। महीनों बाद हमने उसके बारे में पूछताछ करने का फैसला किया। हमने बैंक में और विभिन्न शाखाओं में तलाशी ली। हम उसका पता नहीं लगा सके और न ही उन्हें ढूंढ पाए। हम अभी भी नहीं जानते कि वे उदार व्यक्ति कौन थे ?

कोई आश्चर्य नहीं, परमेश्वर स्वर्गदूतों के नाम से जाने जाने वाले मनुष्यों के द्वारा चमत्कार करता रहता है। हम निश्चित रूप से अपने माता-पिता, दोस्तों, शुभचिंतकों या अजनबियों से अलग-अलग रूपों में और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्वर्गदूतों से मिले होंगे। सभी स्वर्गदूतों को मेरी तरफ से धन्यवाद- ईश्वर का प्रतीक।

हेमलता शिवकुमार
कार्यालयी सहायक

समाज में महिलाओं की स्थिति

मानव समाज के दो बहुमूल्य आयामों - पुरुषों और महिलाओं के बीच संतुलन होने पर जीवन को सुन्दर बनाया जा सकता है जब ऐसा है, तो यह भेदभाव,समानता,असमानता क्यों ? हमें यह देखने की जरूरत है कि यह कहां से शुरू होता है ? वैदिक और उत्तर वैदिक युग में महिलाओं का जीवन बड़ा ही सुखद था । हिन्दू शास्त्रों और ग्रंथों के अनुसार महिलाओं को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वेद के कई छंदों ने साबित किया कि महिलाओं को स्वतंत्रता, शिक्षा और उच्च दर्जा का स्थान प्राप्त था। वैदिक काल में स्त्री प्रधान समाज की व्यवस्था थी। समाज में स्त्रियों को पुरुषों की तरह ही सारे अधिकार प्राप्त थे इसके बाद उत्तर वैदिक काल में बहुत सारी कुप्रथाओं ने जन्म ले लिया जिनमें बाल विवाह, बहुविवाह, आत्मदाह, सती प्रथा इत्यादि शामिल थे । आदि शंकराचार्य एक भारतीय दार्शनिक और धर्मशास्त्री थे, जिन्होंने अद्वैत वेदांत के सिद्धांत की व्याख्या की, संत ने अपनी रचनाओं में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया कि महिला की निंदा करते हुए, पुरुष वास्तव में स्वयं की निंदा करता है। इसीलिए मैं मानती हूँ कि जब भी किसी देवी, लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती की पूजा हो तो उसमें छिपी एक स्त्री को ध्यान में रखा जाये । ताकि जब कोई पुरुष किसी महिला पर अत्याचार करे तो उसे एक बार उस महिला के रुप में देवी का भाव अवश्य नजर आये।

आज बहुत हद तक महिलाओं की स्थिति में सुधार हुए है लेकिन आज भी बहुत से क्षेत्र ऐसे है जहाँ पर ये सुधार लाने की आवश्यकता है ताकि महिलाओं को भी पुरुष के समान सारे अधिकार मिल सके, वे भी अपनी इच्छानुसार जीवन यापन कर सकें। आज महिलाओं ने पुरुष के समान ही हर क्षेत्र में अपना योगदान दिया है इससे ये प्रमाणित होता है कि महिलाएँ किसी भी मामले में पुरुष से कम नहीं है बस उन्हें एक मौके की तलाश है जो पुरुष प्रधान समाज का दायित्व बनता है कि वह इस अवसर को उन्हें प्रदान करे, वो भी बिना किसी भेद-भाव के ताकि हम अपने समाज में समानता स्थापित कर सकें। यदि हम उन्नत देश की परिकल्पना करना चाहे तो उसके लिए महिलाओं का योगदान हमारे लिए अहम होगा। पंडित जवाहारलाल नेहरू ने भी कहा था जब कोई पुरुष शिक्षित होता है तो वो केवल स्वयं को ही शिक्षित करता है लेकिन जब कोई स्त्री शिक्षित होती है तो वह पूरे परिवार को शिक्षित करती है।

पूनम सिंह
पत्नी, डॉ. पवन कुमार सिंह, निदेशक

शबरी के राम

श्री राम ही इस जगत के आधार हैं। कहा भी गया - राम नाम ही एक अधारा। आखिर ये राम हैं कौन और क्या हमारे राम और माता शबरी के राम अलग-अलग हैं? अगर हमारे और माता शबरी के राम एक ही हैं तो माता शबरी ने ऐसी कौन सी भक्ति की, कि उन्हें श्री राम के दर्शन हुए और हममें ऐसी क्या कमी है कि भगवान के दर्शन तो बहुत दूर की बात, हम उन्हें अपने अंदर महसूस भी नहीं कर पाते जबकि वो हम सब के हृदय में विराजमान हैं!

सर्वप्रथम हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि राम हैं कौन, तो इसके जवाब में इतना ही कहा जा सकता है कि राम के बिना हम कुछ भी नहीं हैं। पूरे ब्रह्मांड में केवल राम ही राम हैं, दूसरा कोई नहीं। राम परम ब्रह्म हैं। इस जगत के आधार स्तम्भ हैं राम, सभी तर्कों के परे तर्कातीत हैं राम। वे हमारे मन, बुद्धि और वाणी के परे हैं। उनका वर्णन हम इस बुद्धि से कर ही नहीं सकते। राम हमारी धड़कन हैं, हमारे प्राण हैं।

प्रभु के प्रति दृढ़ आस्था और विश्वास ही जीव को प्रभु से मिलाता है। प्रभु राम के प्रति माता शबरी का ये दृढ़ आस्था और विश्वास हमें रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड में देखने को मिलता है। शबरी के गुरु मतंग ऋषि ने उन्हें पहले ही कह दिया था कि प्रभु आयेंगे उनकी कुटिया में। गुरु की बात पर शबरी को कभी भी शंका नहीं हुई कि इतने वर्ष बीत गये और अभी तक प्रभु आये नहीं, पता नहीं प्रभु आयेंगे भी या नहीं! समय बीतता चला गया परन्तु शबरी की आस्था नहीं टूटी। वो प्रभु की प्रतीक्षा करती रही। रास्ते को फूलों से सजाती रही, इस भाव से कि इसी रास्ते से प्रभु आएँगे। शबरी की इसी भक्ति ने प्रभु श्री राम को आने पर विवश कर दिया। प्रभु को अपने कुटिया में देख कर वो इतनी मग्न हो गई कि वो अपने प्रभु का स्वागत कैसे करे! वह हाथ जोड़कर प्रभु से कहने लगी कि हे प्रभु! मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करुँ! मैं तो अत्यन्त मूढ़ बुद्धि वाली हूँ, मुझे कुछ नहीं आता! माता शबरी का ये समर्पण भाव था। फिर तो हम सब जानते हैं कि प्रभु ने शबरी के जूठे बेर भी खाये। ईश्वर ऐसे सरल हृदय वाले भक्त पर ही अपनी कृपा करते हैं। फिर प्रभु ने माता शबरी को नवधा भक्ति के बारे में बतलाया जिसका बहुत मार्मिक विवरण अरण्यकाण्ड में उपलब्ध है। भगवान राम ने माता शबरी को यह कहते हुए सद्गति प्रदान की, कि उनमें सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ है। स्पष्ट है कि भक्ति के प्यास से भरी आत्मा को ही राम मिलेंगे। यदि प्रभु को पाना है तो शबरी की तरह प्रभु में दृढ़ निष्ठा और विश्वास अपने अन्तरतम में जगानी होगी।

जब हमारा अन्तर्मन प्रभुमय हो जाता है तब बाह्य सुख की खोज बन्द हो जाती है, क्योंकि हम जो बाहर खोज रहे हैं वह हमारे भीतर उपलब्ध है। अन्त में बस इतना ही कहना है कि राम से अनुराग करिए, क्योंकि वह हमारी चेतना हैं।

अंकित शर्मा
ई.जी.पी.एम.2022-24

रियल बनाम रील - प्रभावशाली व्यक्ति

कैप्टलिज्म के इस युग में, प्रौद्योगिकी सही ढंग से दुनिया के हर कोने में अपने पंख फैला रही है। इसके प्रभाव को विशेष रूप से भारत जैसे देश में अनदेखा नहीं किया जा सकता है, जो इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की सबसे अधिक संख्या में दूसरे स्थान पर है। इस डिजिटिअलाइजेशन ने नए युग के उपयोगकर्ताओं के लिए एक नए शब्द को जन्म दिया है जो "सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर" है। ये स्वघोषित प्रभावशाली व्यक्ति स्मार्ट व्यक्ति हैं, सुंदर हैं, जो रैंकों में शामिल होने के लिए जेनेरेशन की आदतों को लुभा रहे हैं और आकार दे रहे हैं| प्रसिद्धि हो- या पैसा, उनके पास यह सब है। लेकिन क्या उन्हें वास्तव में प्रभावशाली कहा जा सकता है? क्या हमने कहीं न कहीं प्रभावित करने का वास्तविक अर्थ खो दिया है?

पहले इंफ्लुएंसर होना बड़ी बात मानी जाती थी। अपने लिए नाम बनाने के लिए बहुत त्याग, सीखने की आवश्यकता थी और उस समर्पण ने दूसरों को उस यात्रा से विश्वास करने और सीखने के लिए प्रेरित किया। हालांकि, आज सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर लगभग 80% युवाओं के वीडियो बनाने के साथ, ऐसा लगता है कि " वह दिन चले गए हैं" । आज की पीढ़ी सोशल मीडिया पर त्वरित प्रसिद्धि, पैसे, पसंद और नापसंद में इतनी भीग गई है कि उनका मानना है कि इंस्टाग्राम पर कुछ फ़िल्टर फ़ोटो, लिप-सिंक वीडियो, सोशल मीडिया अनुयायियों का पुनरावृत्ति "बात" है! और आप हैं - तथाकथित प्रभावशाली।

स्वर्गीय आदरणीय डॉ भीमराव आबेदकर जैसे वास्तविक प्रभावक, जिन्होंने सरासर इच्छाशक्ति के माध्यम से शिक्षा को गले लगाने के लिए कास्टिज्म की बेड़ियों को तोड़ दिया। उस युग में उनके पीछे शिक्षा के प्रति कोई कानून नहीं होने के कारण, और यहां तक कि निचली जाति के लोगों के लिए पीने के पानी के लिए भी प्रतिबंध लागू थे, शिक्षा प्राप्त करने की उनकी मजबूत इच्छा शक्ति, इतने सारे व्यक्तियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया और उम्मीद को फिर से जगाया कि शिक्षा समाज के किसी एक भागी वर्ग तक सीमित नहीं है। क्या वह एक वास्तविक प्रभावक नहीं है? आइए ऐसे ही एक और उदाहरण को देखें हमारे दिवंगत राष्ट्रपति माननीय डॉ एपीजे अब्दुल कलाम, जो वित्तीय बाधाओं के बावजूद न केवल एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, भारत के राष्ट्रपति बने, बल्कि दुनिया भर के विश्वविद्यालयों से 38 डॉक्टरेट सम्मान और भारत गणराज्य के 3 सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार सहित- "भारत रत्न" प्राप्त किए। भारत का मिसाइल मैन, जिसने वैश्विक मंच पर तिरंगे झंडे का महिमामंडन किया, मुझे गर्व और जुनून से भर देता है । क्या उनके जैसे लोग हमारे प्रभाव का स्रोत नहीं होने चाहिए ? क्या वर्तमान पीढ़ी को उनके बारे में पता है ?

क्या ये उदाहरण बहुत पुराने हैं ? ठीक है, आइए मलाला को देखें, एक युवा लड़की जिसे पढ़ना पसंद था और 12 साल की उम्र के बावजूद, तालिबान चरमपंथियों के खिलाफ खड़ी थी और शिक्षा के प्रति लड़कियों के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक रूप से अपनी आवाज उठाई थी। परिणाम ? उसने इस पुनर्मिलन के लिए अपने सिर में एक गोली खा ली, लेकिन इसने उसे नहीं रोका। वह अधिक दृढ़ और मजबूती से वापस आई और अभी भी लड़कियों के लिए शिक्षा के लिए लड़ना जारी रखती है। वर्ष 2014, में 17 साल की उम्र में वह अब तक की सबसे कम उम्र की नोबेल पुरस्कार विजेता थीं। क्या यह हमारे लिए प्रभाव का वास्तविक स्रोत नहीं होना चाहिए?

इन दिनों एक "सार्वजनिक व्यक्ति" बनना सोशल मीडिया के लिए इतना मुश्किल नहीं है। कोई भी खुद को सोशल मीडिया पर एक सार्वजनिक व्यक्ति के रूप में लेबल कर सकता है। एक प्रभावशाली होने के नाते कई लोगों के लिए एक आकर्षक विकल्प हो सकता है, लेकिन अगर वे पर्याप्त शिक्षित नहीं हैं, तो दूसरों पर उनका प्रभाव अच्छे से अधिक नुकसान पहुंचा सकता है। वर्तमान पीढ़ी को अपने दम पर समृद्ध होते देखना अच्छा है। लेकिन क्या वे वास्तव में दूसरों को प्रेरित कर रहे हैं? मेरा मानना है कि, उन्हें एक क्षेत्र में विशेषज्ञता की ओर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए, चाहे वह और फिर आने वाली पीढ़ी के सपनों को पंख दें।

लेकिन, आज ऐसा लगता है कि युवा पसंद और नापसंद के महिमामंडित डिजिटल दबाव के तहत प्रभावशाली लोगों के वास्तविक अर्थ को भूल गए हैं। हर कोई, रातोंरात प्रसिद्ध होने का प्रयास कर रहा है, लेकिन कोई भी महान नहीं बनना चाहता है। महानता प्राप्त करने के लिए कठिन है और एक त्वरित संतुष्टि नहीं है ! यह उच्च समय है कि हमें दर्पण में देखना होगा और कार्यों पर प्रतिबिंबित करना होगा। तथाकथित बढ़ते प्रभावकों और तत्काल संतुष्टि के लिए उनका जोर सामान्य रूप से समाज के लिए कोई अच्छा नहीं कर रहा है, हमारे दिमाग के साथ हस्तक्षेप करने की तुलना में। वास्तविक प्रभावकों की सलाह और सीख, जिन्होंने अतीत में राष्ट्र का महिमामंडन किया था, इसको गंभीरता से देखा जाना चाहिए, ताकि इतने सारे लोगों के जीवन में वास्तविक अंतर हो सके।

"किसी ने ठीक ही कहा है: आग में तपकर ही सोना कुंदन बनता है|"

वैभव राजाराम ठाकुर
पी.जी.सी.बी.ए.ए 2021-22

5G स्पेक्ट्रम

आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो इंटरनेट का इस्तेमाल ना करता हो। हमारे भारत देश में पहले के मुकाबले अब गांव में रहने वाले लोग भी इंटरनेट का इस्तेमाल करने लगे हैं। हमारे देश की सरकार ने भी भारत को डिजिटल इंडिया का नाम दिया है और सरकारी दफ्तरों में भी सभी प्रकार के कार्य अब डिजिटल रूप में यानि कि इंटरनेट की सहायता से किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में हम 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और अब आगे हम धीरे-धीरे 5जी तकनीक के ओर अग्रसर हो रहे हैं।

5G में 'G' का अर्थ क्या है?

अब तक 1G से लेकर 5G टेक्नोलॉजी आ चुकी है। कई लोग सोचते हैं, कि आखिर "G" का क्या तात्पर्य होता है। तो दोस्तों हम आपको बता दें, कि 1G से लेकर 5G तक "G" का तात्पर्य जनरेशन से होता है, जनरेशन यानी की पीढ़ी। हम जिस भी पीढ़ी की टेक्नोलॉजी इस्तेमाल कर रहे होते हैं, उसके आगे "G" लग जाता है और यही "G" आधुनिक तकनीक के उपकरण को नई पीढ़ी के रूप में दर्शाने का कार्य करता है। हमारा देश धीरे-धीरे नई तकनीक की ओर अग्रसर होता जा रहा है और हमारे देश में भी नई-नई तकनीकों का निर्माण किया जा रहा है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी क्या है ?

5G की टेक्नोलॉजी दूरसंचार की टेक्नोलॉजी से संबंध रखती है। किसी भी तकनीक का इस्तेमाल वायरलेस तकनीक के जरिए किया जाता है। दूरसंचार की इस नई तकनीक में रेडियो तरंगे और विभिन्न तरह की रेडियो आवृत्ति का इस्तेमाल किया जाता है। अब तक जितने भी टेक्नोलॉजी दूरसंचार के क्षेत्र में आ चुके हैं, उनके मुकाबले में यह तकनीक काफी नई और तीव्रता से कार्य करने वाली तकनीक है। इस नवीन तकनीक का अंतिम मानव का निर्धारण आईटीयू यानी कि इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन के हाथों किया जाता है। 5G की तकनीक 4G तकनीक के मुकाबले नेक्स्ट जनरेशन की तकनीक है और यह अब तक आ चुकी सभी तकनीक से सबसे ज्यादा आधुनिक तकनीक मानी जा रही है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी riभारत में लांच

छठवें स्थान पर दुनिया के सबसे अमीर आदमी मुकेश अंबानी जी ने 5G तकनीक पर अपडेट देते हुए कहा है, कि इसे हमारे भारत देश में 2021 के दूसरी छमाही में ग्राहकों की सेवा के लिए 5 जी नेटवर्क को लांच कर दिया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हमारे देश में इससे जुड़े हुए सभी प्रकार के नवीन बदलाव एवं इससे जुड़ी हुई प्रक्रियाओं को एक बूस्ट प्रदान करने की आवश्यकता है। अंबानी जी ने कहा कि यह तकनीक सभी वर्गों के हाथों तक पहुंचे इसके लिए इसे आसान, सुलभ एवं सस्ता करने की बेहद आवश्यकता होगी। इसलिए इसे जल्द से जल्द लांच किया जायेगा।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी फायदे

- इस नई तकनीक मुख्य विशेषता यह है कि इसकी सहायता से ऑटोमोबाइल के जगत में औद्योगिक उपकरण एवं संसाधन यूटिलिटी मशीन संचार एवं आंतरिक सुरक्षा भी पहले के मुकाबले और विकसित एवं बेहतर होने के साथ-साथ इनके बीच में संबद्धता की वृद्धि होगी।
- 5G तकनीक सुपर हाई स्पीड इंटरनेट की कनेक्टिविटी प्रदान करने के साथ-साथ यह कई महत्वपूर्ण स्थानों में उपयोग में लाया जाएगा। इस टेक्नोलॉजी आ जाने से कनेक्टिविटी मे और भी ज्यादा विकास एवं शुद्धता प्राप्त होगी।
- 5G के तकनीक की वजह से ड्राइवरलेस कार, हेल्थ केयर, वर्चुअल रियलिटी, क्लाउड गेमिंग के क्षेत्र में नए-नए विकासशील रास्ते खुलते चले जाएंगे।
- क्वॉलिकम के अनुसार अभी तक 5G की तकनीक ने करीब 13.1 ट्रिलियन डॉलर ग्लोबल इकोनामी को आउटपुट प्रदान कर दिया है। इसकी वजह से दुनिया भर में करीब 22.8 मिलियन के नए जॉब अवसर विकसित हो रहे हैं।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी विशेषताएं

5G नेटवर्क स्पीड

इस नई तकनीक की स्पीड करीब एक सेकंड में 20gb के आधार पर इसके उपभोक्ताओं को प्राप्त होगी। इस तकनीक के आ जाने से टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए सभी कार्यों में तेजी से विकास होगा और सभी कार्य आसानी से काफी फास्ट स्पीड में किए जा सकेंगे।

इंटरनेट स्पीड में वृद्धि

अभी हम वर्तमान समय में 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और इस तकनीक का इस्तेमाल करके हम 1 सेकेंड में करीब 1GB की फाइल को डाउनलोड करने की क्षमता रखते हैं, वही 5G की तकनीक में हमें 1 सेकेंड के अंदर करीब 10GB या इससे ऊपर की डाउनलोडिंग क्षमता वाली गति प्राप्त होगी।

डिजिटल इंडिया क्षेत्र में विकास

5G नेटवर्क के आ जाने से देश में डिजिटल इंडिया को एक अच्छी गति प्राप्त होगी और साथ ही में देश के विकास में भी तीव्रता आएगी।

जीडीपी बढ़ोतरी में तेजी

हाल ही में आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन ने दावा देते हुए कहा है, कि देश में 5G के तकनीक के आ जाने से हमारे देश की जीडीपी एवं अर्थव्यवस्था में काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकता है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी नुकसान

- तकनीकी शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के अनुसार एक शोध में पाया गया कि 5G तकनीक की तरंगे दीवारों को भेदने में पूरी तरीके से असक्षम होती है। इसी के कारणवश इसका घनत्व बहुत दूर तक नहीं जा सकता है और इसी के परिणाम स्वरूप इसके नेटवर्क में कमजोरी पाई गई।
- दीवारों को भेदने के अलावा इसकी तकनीक बारिश, पेड़ पौधों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को भी भेदने में पूरी तरीके से असक्षम सिद्ध हुई है। 5G तकनीक को लॉन्च करने के बाद हमें इसके नेटवर्क में काफी समस्या देखने को मिल सकती है।

- कई साधारण लोगों का मानना है, कि 5G तकनीक में जिन किरणों का उपयोग किया जा रहा है, उनका परिणाम काफी घातक सिद्ध हो रहा है और उसी का घातक परिणाम कोरोना वायरस है, परंतु अभी तक इस विषय में कोई साक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकी है।

5G नेटवर्क स्पेक्ट्रम बैंड

5G की नई तकनीक में millimeter-wave स्पेक्ट्रम अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसका सर्वप्रथम विचार वर्ष 1995 में सबसे पहले जगदीश चंद्र बोस जी ने प्रस्तुत किया था और उन्होंने बताया था, कि इन वेब का इस्तेमाल करके हम कम्युनिकेशन को बेहतर बना सकते हैं। इस प्रकार की तरंगे करीब 30 से लेकर 300 गीगाहर्टज फ्रीक्वेंसी पर काम कर सकती हैं। ऐसी तरंगों का इस्तेमाल हम सैटेलाइट और रडार सिस्टम के अंदर भी इस्तेमाल करते हैं। 5G नेटवर्क की नई तकनीक करीब 3400 मेगाहर्ट्ज, 3500 मेगाहर्ट्ज और यहां तक कि 3600 मेगाहर्ट्ज बैंड्स पर काम कर सकती है। इस नई नेटवर्क तकनीक के लिए 3500 मेगाहर्ट्ज बैंड इसके लिए एक आदर्श बैंड कह सकते हैं, क्योंकि यह सबसे मध्य का बैंड है और इसके साथ ही यह काफी अच्छी कनेक्टिविटी भी प्रदान करता है।

5G नेटवर्क का कोरोना कनेक्शन

हाल ही में कई बड़े-बड़े सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लोगों ने कहां है, कि 5G तकनीक के टेस्टिंग के वजह से ही कोरोना वायरस का संक्रमण तेजी से फैल रहा है और कोरोना वायरस के उत्पत्ति का भी कारण 5G तकनीकी है। इस प्रकार की ख़बरें हर एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 5G की तकनीक को लेकर फैल रही है। तो क्या सच में 5G के कारण हो रही है मौत आइये जानते हैं क्या है ये –

5G तकनीक से जुड़ी हुई ये खबरें एक भ्रांतियां मात्र है. इन भ्रांतियों के बारे में स्पष्टता से वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन यानी के डब्ल्यूएचओ ने एक अधिकारिक जानकारी लोगों के साथ साझा की है. उन्होंने कहा है, कि कोरोना वायरस का संक्रमण मोबाइल फोन नेटवर्क या फिर किसी अन्य रेडियो तरंगों के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा सकता है। साथ ही डब्ल्यूएचओ ने यह भी कहा है कि करोना वायरस का संक्रमण उन देशों में भी है, जहां पर अभी 5G की नेटवर्क टेस्टिंग तक नहीं की गई है और ना ही वहां पर अभी तक 5G का मोबाइल नेटवर्क स्थापित किया गया है। फिर भी वहां पैर यह फ़ैल रहा है इसलिए 5G का कोरोना से कोई संबंध नहीं है.

जब 5G की नई तकनीक पूरी तरीके से कार्य करने लगेगी तब संपूर्ण विश्व में एक अलग ही विकास की लहर दौड़ना प्रारंभ कर देगी। इस तकनीक के भारत में आ जाने से हमारे देश का विकास और भी तीव्रता से होगा और नए नए रोजगार के अवसर लोगों को प्राप्त होंगे।

क्या आप इनके उत्तर ढूंढ सकते हैं?

Q : सर्वप्रथम 5G तकनीक को किस देश में लांच किया गया ?

ANS :

Q : भारत देश में 5G की तकनीक को कब लांच किया जाएगा ?

ANS :

Q : 5G कैसे कार्य करता है ?

ANS :

Q : भारत में 5G किन फोन में चलाया जा सकेगा ?

ANS :

प्रोफेसर डॉ. अशोक धुलधुले
पिता, असमिता धुलधुले पी.जी.पी.एम.

शिक्षा के माध्यम के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं एवं वाचन-संस्कृति के संकोच की प्रक्रिया

भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय जीवन में आमूलचूल परिवर्तन हुए और हो रहे हैं। भूमंडलीकरण शब्द बड़ा ही लुभावना लगता है। ऐसा लगता है कि संत ज्ञानेश्वर के शब्द 'हे विश्वचि माझे घर' (यह पूरा विश्व मेरा घर) की संकल्पना मूर्तिमान होने जा रही है।भूमंडलीकरण स्वरूप सूर्य के उदित होते ही विश्व के सारे देशों की सीमा-रेखाएँ मिटायी जा रही हो और सब ओर सभी प्रकार के संघर्ष, कलह शांत होकर भाईचारे का उजाला दिगंत में फैल गया हो; कोई भी आसानी से किसी भी देश में आ-जा सकता हो। वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है। कुछ संकल्पनाएँ सामान्य जनों के लिए भ्रम की स्थिति पैदा कर देनेवाली होती हैं।

'भूमंडलीकरण' यह शब्द पारिभाषिक है। विकसित देशों द्वारा विश्व के अन्य देशों को व्यापार हेतु कतिपय शर्तों के आधार पर एकत्रित कर वाणिज्यिक आदान-प्रदान करने के कारण विश्व में जो स्थितियाँ बन रही हैं उसे 'भूमंडलीकरण' की संज्ञा से अभीहित किया जा रहा है। भूमंडलीकरण वास्तव में आर्थिक क्षेत्र से जुड़ा हुआ है; किंतु आर्थिक उन्नति को अभीप्सित मानकर इससे जो देश जुड़ गए उन्हें अन्य क्षेत्रों में भी अच्छे-बुरे परिणामों का सामना करना पड़ रहा है।

मानव जीवन के ऐसे बहुत कम क्षेत्र बचे होंगे जिन पर भूमंडलीकरण का प्रभाव न हुआ हो। खान-पान, वेशभूषा, पहनावा-ओढ़ावा, विचार-विमर्श, शिक्षा-दीक्षा, यात्राएँ, मनोरंजन के साधन एवं तरीके, आपसी व्यवहार अर्थात आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, लौकिक-पारलौकिक, आध्यात्मिक आदि सभी पर भूमंडलीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है। कतिपय लोग सोचते हैं कि धार्मिक क्षेत्र इसके प्रभाव से अछूता रहा हो या कम प्रभावित हो, तो वे गलत सोचते हैं। आजकल पुजारी पूजा करते समय या कोई धार्मिक विधि करते समय मोबाइल फोन से दूसरी पूजा का समय तय करते हुए देखे जा सकते हैं, कुण्डलियाँ कम्प्यूटर पर बनाई और ई-मेल से भेजी जा रही हैं, राशिफल टी.वी. पर दिखाया जा रहा है। यह विषय इतना व्यापक है कि इस पर अलग से शोधकार्य करने की गुंजाइश है।

भारत जैसे अध्यात्मवाद को दीर्घकाल तक मानने एवं मनवानेवाले देश में केवल आर्थिक उन्नति का विचार तुच्छ माना जाता रहा है और भूमंडलीकरण के कारण ठीक इसके विपरीत हुआ है। आर्थिक उन्नति अथवा भौतिक प्रगति ही भूमंडलीकरण के केंद्र में रही है। इसके पीछे विकसित देशों की यदि कुछ परमार्थ की भावना हो तो उसकी मात्रा उनके स्वार्थ के मुकाबले बहुत कम है। अविकसित, अर्द्धविकसित एवं विकासशील देशों से कईं गुणा लाभ विकसित देश उठा रहे हैं। यह एक षड्यंत्र की तरह है। व्यापार-नीति तय करते समय विकसित देशों की ही बात मान ली जाती है। विकसित देश अपनी हर वह चीज इन गरीब देशों को बेचते हैं, जिनकी खपत उनके अपने देशों में नहीं होती।

भारत मूलतः पूँजीवादी देश नहीं है। हाल ही में आयी आर्थिक मंदी के बवंडर में कईं देशों की नैया गोते खा रही थी तब भारत ही एक ऐसा देश था जिसपर इसका ज्यादा प्रभाव देखने को नहीं मिला। इसके कारणों की खोज करनेवाले विद्वानों ने स्पष्ट किया कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि भारतीय समाज फिजूलखर्ची से बचने और भविष्य के लिए बचत करनेवालों का देश है। यहाँ का किसान खेत में चाहे जितनी भी उपज हो गई हो, रूखी-सूखी खाकर आनेवाले समय के लिए बीज बचाकर रखता है। कालचक्र की विपरीत गति को वह भलीभाँति पहचानता है। वह जानता है कि इस वर्ष चाहे आबादी-आबाद हो पर कभी भी अकाल का सामना करना पड़ सकता है।

यह स्थिति अब तेजी से बदल रही है। चित्र उलटा होता जा रहा है। भौतिकतावादी दृष्टिकोण के पनपने के कारण आध्यात्मिकता कहीं पीछे छूटती हुई दिखाई दे रही हैऔर निजीकरण के माध्यम से पूँजीवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। अब बचत और भविष्य के बारे में सोचने की बजाय लोग क्षणजीवी हो गए हैं। इसलिए किश्तों पर, उधार या जैसे भी हासिल हो वे अपनी सभी जरूरतों को जल्दी से जल्दी पूरा कर लेना चाहते हैं। वे जान गए हैं कि आजीवन मेहनत कर ये चीजें बुढ़ापे में ही प्राप्त की जा सकती हैं जिसका उपभोग तब नहीं किया जा सकता।

भूमंडलीकरण के कारण व्यापारिक अनुबंध से आपस में जुड़े देशों में धन-संपत्ति में वृद्धि हो रही है; क्योंकि रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो गई है। इसके परिणामस्वरूप मौज-मजावाद पनप रहा है। लोग तकनीकी शिक्षा की ओर आकर्षित हैं और कम समय में नौकरियाँ हासिल करने की होड़ मची है। भूमंडलीकरण का शिक्षा के क्षेत्र पर प्रभाव लक्षणीय है। शिक्षा का अर्थ ज्ञान संपादन तो है पर एक सीमित दायरे में। आज का शिक्षा ग्रहण करनेवाला विद्यार्थी नहीं कहला सकता वह छात्र है, एक विशिष्ट शिक्षा संस्थान के छत्र के नीचे शिक्षा ग्रहण करनेवाला छात्र! व्यापक रूप में विद्या के अर्थ अध्ययन हेतु आनेवाले लोगों की संख्या बहुत कम है।

आजकल छात्र केवल रोजगारोन्मुख शिक्षा का चयन करते हैं। वे उन्हीं पुस्तकों को पढ़ते हैं जो उनके अध्ययनक्रम में हैं। इसके अतिरिक्त अन्य ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजनात्मक पुस्तकें पढ़ने का समय उनके पास नहीं है। मेडिकल, इंजिनियरिंग के छात्रों को छोड़िए साहित्य के छात्र भी पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त केवल कुंजियाँ पढ़ते देखे जा सकते हैं। इसलिए वाचन-संस्कृति का संकोच हो रहा है।

रोजगारोन्मुख शिक्षा माध्यमों का चयन करने की ओर झुकाव होने से एक विशिष्ट भाषा ही हावी होती जा रही है। इसके कारण क्षेत्रीय भाषाओं का दायरा सिमट रहा है। शिक्षा ग्रहण करने का जो माध्यम छात्र चुनते हैं उसी में वे अपनी निपुणता दिखाने में जुट जाते हैं। अर्थात न शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषा होती है न विचार करने की भाषा ही। इसलिए जो कुछ पढ़ा जाता है वह एक विशिष्ट परिनिष्ठित भाषा होती है जिससे क्षेत्रीय भाषाओं के लिए न शिक्षा के माध्यम के रूप में और न वाचन हेतु स्थान बचता है।क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर रोजगार उपलब्ध हो सकेगा या नहीं इसका अनावश्यक डर छात्रों एवं अभिभावकों के दिमाग में बैठ गया

है। अंग्रेजी पढ़ने-बोलने के कारण अच्छा रोजगार प्राप्त हो जाता है, इसे वे अपनी आँखों से देख रहे हैं। इसलिए क्षेत्रीय भाषाओं से पल्ला झाड़कर उन्होंने अंग्रेजी का दामन थामना उचित समझा और इसी कारण शिक्षा के माध्यम के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं का संकोच हो गया है ऐसा कहा जाए तो अनुचित न होगा।

मनुष्य की जीवन-शैली में काफी परिवर्तन आ गए हैं। कार्यव्यस्तता बढ़ गई है और इसमें से यदि समय बचता है तो उसका उपयोग करने हेतु मनोरंजन करने के तरीके बदल गए हैं। उत्तर-उत्तर आधुनिकता के इस युग में जनसंचार के माध्यम मानव-जीवन पर हावी हो गए हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की मार से बच गए तो सैर-सपाटे पर निकल गए अथवा मोबाइल के इस्तेमाल में समय व्यतीत कर लिया। मनोरंजन के साधनों के अभाव में वाचन-संस्कृति के जो स्वर्णिम दिन थे वे टी.वी., सिनेमा, मोबाइल, मॉल्स, पार्टियाँ, इंटरनेट, पिकनिक के कारण अब हवा हो गए हैं। वाचन के लिए मनचाही पुस्तकें जितनी आसानी से उपलब्ध नहीं हो सकती उतनी आसानी से अन्य मनबहलाव के साधन दरवाजे पर खड़े हैं।

वाचन संस्कृति शिक्षा से जुड़ी है। शिक्षा पद्धति कठिनता से सरलता की ओर जाने का दावा कर रही है। यह सरलता उपाधि प्राप्ति हेतु होती है या ज्ञान प्राप्ति हेतु यह समझना कठिन है। इसका प्रभाव भी वाचन-संस्कृति पर पड़ा है जिससे इसकी निरंतर अवनति होती दिखाई दे रही है। जब शिक्षा-पद्धति में वाचन के महत्व को अधोरेखित किया जाएगा तभी इसकी उन्नति संभव है।

वाचन-संस्कृति समयाभाव के कारण संकुचित हो रही है। यह समयाभाव मानव-निर्मित है। मनुष्य ने ही अपने आपको इतना व्यस्त बना दिया है जिससे जरूरी वाचन भी वह नहीं कर पाता। उच्चशिक्षित व्यक्ति पुस्तक पढ़ने की बजाय विश्व महाजाल (इंटरनेट) पर अपनी पसंद की जानकारी पढ़ने मे अधिक रुचि दिखलाते हैं। खाली समय नहीं है, इसलिए खाली समय में पढ़े जानेवाली पुस्तकों के लिए ग्राहक नहीं हैं। नौकरी प्राप्त हो जाने के बाद ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती; क्योंकि नौकरी लायक जो ज्ञान आवश्यक था उसे हम हासिल कर चुके हैं ऐसी कुछ लोगों की मति होती है।

शिक्षा के माध्यम के रूप में किस भाषा को अधिक महत्व दिया जाए इसके कोई दिशानिर्देश नहीं हैं। मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए इसके पक्षधर तो सभी दिखाई देते हैं; परंतु कृति का समय आता है तब अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे अंग्रेजी स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए कतार में खड़े हो जाते हैं। संस्कार तो घर से ही प्रारंभ हो जाते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए उस क्षेत्र के लोगों की इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है, जिसका अभाव है।

उपर्युक्त सभी बातों के कारण शिक्षा के माध्यम के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं का एवं वाचन-संस्कृति का संकोच होता जा रहा है। इसके संकोच की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। भूमंडलीकरण के कारण विश्व में आर्थिक उन्नति को केंद्र में रखकर सारे व्यवहार करने की वृत्ति मनुष्य पर हावी हो गई है। इस कारण वही शिक्षा उसे लाभप्रद महसूस होने लगी है जिससे आसानी से उपजीविका चल सके अथवा आर्थिक उन्नति हो सके। ऐसी शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध न होने के कारण ऐसे लोगों का झुकाव अंग्रेजी आदि भाषाओं की ओर अधिक हुआ। शिक्षा का माध्यम न होने के कारण क्षेत्रीय भाषा का संकोच हो गया तथा ऐसी भाषाओं में वाचन-संस्कृति खत्म होने की कगार पर है।

के. एम. हर्षिता
पुत्री, के. मुथुकुमारन

सच्चे दोस्त

एक गांव में दो सच्चे दोस्त रहते थे। राम और धनी, दोनों बहुत ही गरीब परिवार से थे। एक दिन राम का एक्सीडेंट हो गया। जब धनी को यह खबर मिली तो वो तुरन्त राम से मिलने अस्पताल गया। राम का बहुत सारा खून बेह चुका था। चिकित्सक ने कहा कि इन्हें जल्द ही खून की आवश्यकता है। ये बात सुनते ही धनी ने चिकित्सक से कहा की आप मेरा सारा खून ले लीजिए पर मेरे दोस्त को बचा लीजिए। धनी ने राम को अपना खून देकर बचा लिया। राम की आँखे जैसे ही खुली चिकित्सक ने उसे बताया कि धनी ने अपना खून देकर तुम्हारी जान बचायी। उसने धनी को देखा और उससे कहा धन्यवाद दोस्त तुमने आज मेरी जान बचा ली।

के. एम. हरिश
पुत्र, के. मुथुकुमारन

बूढ़ी अम्मा और उसका कार्य

एक गाँव में, एक बूढ़ी अम्मा रहती थी । उसका दैनिक गृहकार्य खाना पकाना था । बूढ़ी अम्मा घर पर अकेले ही रहा करती थी । उसके साथ उसके परिवार का कोई भी नहीं था । वह स्वयं अपने लिए खाना बनाती और स्वयं उसे खा लेती । इसके अलावा वह झाड़ू बेचने का कार्य भी करती । अम्मा के पास चार मुर्गे थे वह उसे रोजाना खाना देती और इसके साथ ही कुएं से पानी लाकर पौधो में पानी भी डाला करती ।

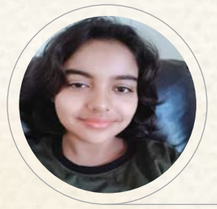

अग्रिमा सुजीत शर्मा
पुत्री, प्रो. सुजीत कुमार शर्मा

मेरी बगिया

मेरी बगिया बड़ी निराली,
मैं करती इसकी रखवाली,
रंग-बिरंगे फूल है इसमें,
तरह-तरह की उनकी किस्में।
फल-फूलों की होती बहार,
खुशबू से महके घर बार।
बारिश में छाए हरियाली,
झूमे पेड़-पौधे और डाली।
मैं करती बगिया से प्यार,
तुम भी आकर देखो एक बार।

अनाया दीक्षित
पुत्री, प्रो. बिपिन दीक्षित

रीनू और कीर्ति की दोस्ती

एक लड़की थी - रीनू । उसकी कॉलोनी में बहुत सारे बच्चे थे जैसे रिंकी, रितु, रिती, रीना और रिशु। पर रीनू की बेस्ट फ्रेंड थी मीनू। रीनू और मीनू सेम ऐज ग्रुप की थी और उनके घर भी अगल-बगल थे । वो दोनों खूब मज़े करती - हमेशा साथ में खेलती, पढ़ती, घूमती, और बातें करती। एक दिन रीनू को पता चला की मीनू के पापा का ट्रांसफर हो रहा है। वे लोग कनाडा शिफ्ट हो रहे हैं। मीनू के जाने की बात सुन कर रीनू बहुत उदास हो गयी । उसके कॉलोनी से जाने के बाद रीनू चुपचाप रहने लगी। वो ज़्यादातर घर में ही खेलती थी। कॉलोनी के बाक़ी बच्चों के साथ खेलने में उसका मन नहीं लगता था। सारे बच्चे उम्र में या तो उससे बड़े थे या छोटे। वो मीनू को बहुत मिस करती थी। एक दिन शाम को जब रीनू ट्यूशन से अपने घर आ रही थी तो उसने गलती से अपने घर की वजह बगल वाले घर की बेल बजा दी। जब दरवाज़ा खुला तो रीनू ने सामने एक छोटी बच्ची को खड़े देखा । उसको रियलाइज़ हुआ कि वो गलत घर में आ गयी थी। रीनू ने कहा - 'आई ऍम सॉरी' मैंने गलती से बेल बजा दी। तब तक उस छोटी बच्ची की मां ने पीछे से आवाज़ लगायी 'कीर्ति ! दरवाज़े पे कौन है?' कीर्ति ने मुस्कुराते हुए रीनू से कहा - 'इट्स ओके! ', क्या तुम मेरे साथ खेलोगी? रीनू खुश हो गयी, वो दौड़ कर अपनी मां के पास खेलने के लिए पूछने गयी। अब रीनू और कीर्ति साथ-साथ खेलने लगे। और फिर वो दोनों एक दूसरे के बेस्ट फ्रेंड्स बन गए।

अनाया दीक्षित
पुत्री, प्रो. बिपिन दीक्षित

बाल गीत

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया एक, तू खायेगी केक
लॉलीपॉप भी तुमको खिलाएंगे।

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया दो, तू खेलेगी खो-खो
कब्बड्डी भी तुमको सिखाएंगे।

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया तीन, तू बजाएगी बीन
गिटार भी तुमको दिलाएंगे।

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया चार, तू खायेगी अनार
आम भी तुमको खिलाएंगे।

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया पांच, तू करेगी नाच
स्केटिंग भी तुमको सिखाएंगे।

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया छः, तू जाएगी पुणे
बैंगलोर भी तुमको घुमाएंगे।

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया सात, तू जाएगी बारात
मेला भी तुमको दिखाएंगे

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया आठ, तू पीयेगी छाछ
मिल्कशेक्स भी तुमको दिलाएंगे

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया नौ, तू बनाएगी रेनबो
यूनिकॉर्न भी तुमको सिखाएंगे

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
बोल मेरी गुड़िया दस, बाहर खड़ी है बस
मोटर कार से भी तुमको घुमाएंगे

हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे
हम तो अपनी गुड़िया को गिनती सिखाएंगे

अद्विता खरे
पुत्री - प्रोफेसर अपूर्व खरे

अनमोल उपहार

मेरा नाम रमेश है। जब मैं नौ साल का था, तब मेरी माँ एक महिला के घर काम करती थीं । उनका नाम रोशनी था। वह बड़ी दयालु और प्यारी थीं। वह सभी की मदद करती थी। वे मुझे बहुत प्यार करती थीं। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी इसीलिए वे माँ को काम के ज्यादा पैसे नहीं दे पाती थीं। किन्तु उन्होंने मुझे यह वादा किया था कि वे दीपावली पर मुझे एक उपहार देंगी।

दीपावली से कुछ दिन पहले एक दुर्घटना हो गयी। वे स्कूटर से जा रही थीं और अचानक वह एक कार से टकरा गयी। मुझे जैसे ही ये बात पता चली, मैं तुरंत अपनी माँ के साथ सीधा अस्पताल चला गया। उनके एक पैर की हड्डी टूट गयी थी। मुझे उदास देख कर वे बोलीं, “बेटा चिंता मत करो, मैं ठीक हो जाऊँगी।”

उनकी एक बहुत प्रिय मित्र थीं। अस्पताल में उन्होंने जब मुझे देखा तो वे बोलीं, “तुम वही लड़के हो न, जिसकी माँ मेरी दोस्त के घर काम करती हैं?” मैंने बोला, “हाँ। पर आप कौन हैं और यह क्यों पूछ रही हैं?” वे बोलीं, “ऐसे ही। पता है, मेरी दोस्त तुम्हारी बहुत बड़ाई करती है। उन्होंने मुझे बताया था कि वो तुमको दीपावली पर एक तोहफा देंगी।” यह सुन कर मैं बहुत प्रसन्न हो गया।

फिर कुछ दिनों बाद दीपावली आयी । तब तक रोशनी आंटी भी अस्पताल से घर पहुँच गयी थीं। माँ ने भी फिर से रोशनी आंटी के घर काम शुरू कर दिया था। जब मैं दीपावली के दिन उनके घर गया तो उन्होंने मुझे बुलाया और एक लाल रंग के कागज में पैक करा हुआ छोटा-सा डिब्बा दिया और बोलीं, “हैप्पी दिवाली। ये डिब्बा घर जा के खोलना।” मैंने भी उनको हैप्पी दिवाली बोला और मैं ख़ुशी से लगभग उड़ते हुए घर पहुंचा । डिब्बा खोलते ही मैं नाचने लगा। उसमें एक स्मार्ट वॉच थी। मुझे तोहफा बहुत अच्छा लगा।

Certificate distributed to Ms Priya during the Hindi Diwas celebration.

Certificate distributed to Shri. Sumit Banerjee during the Hindi Diwas celebration

Prize distribution to Ms. Shubhi Khare during the Hindi Diwas celebration

Director addressing the audience during the Hindi Diwas celebrations

Commissioner of Customs visit to LRC on 14.9.2021

Release of Hindi Magazine SANGAM on 14 Sep 2021

IIM-Tiruchy launches annual Hindi magazine *'Sangam'*

Tiruchy: IIM-Tiruchy launched an annual Hindi magazine, *'Sangam,'* as part of it Hindi Day celebrations held recently. Uma Shanker, Chief Commissioner of Customs (Preventive), and Ashok Kumar Singh, Assistant Commissioner of Provident Fund, were guests. Pawan Kumar Singh, Director, IIM-Tiruchy, spoke on how Hindi could possibly help bring people together as it is a widely spoken language. Winners of competitions were given prizes. Ashok Kumar Singh urged students to use more Hindi words in their daily lives. Uma Shanker spoke how a 'practical and pragmatic approach' in the form and use of Hindi can achieve wider acceptance.

தினமலர் திருச்சி சனி செப்டம்பர் 18, 2021

கல்வி நிறுவன நிகழ்ச்சிகள்

திருச்சி ஐஐஎம் நிறுவனத்தில் நடந்த இந்தி தின கொண்டாட்டத்தின்போது அசோக்குமார் சிங், உமா சங்கர் ஆகியோருக்கு இயக்குனர் பவன்குமார் சிங் இந்தியில் மொழி பெயர்க்கப்பட்ட திருக்குறள் புத்தகம் வழங்கினார்.

இந்தி தின கொண்டாட்டம்

திருச்சி: இந்திய தொழில் மேலாண்மை நிறுவனத்தில்(ஐஐஎம்) இந்தி தின கொண்டாடப் பட்டது. ஐஐஎம் திருச்சி இயக்குனர் பவன் குமார் சிங் தலைமை வகித்தார். திருச்சி சுங்கத்துறை தலைமை ஆணையர் உமா சங்கர், திருச்சி வருங்கால வைப்பு நிதி உதவி கமிஷனர் அசோக் குமார் சிங் ஆகியோர் சிறப்பு விருந்தினர்களாக கலந்துகொண்டு, சிறப்புரையாற்றினர். இயக்குனர் பவன்குமார் சிங் ஐஐஎம் திருச்சியில் வெளியிடப் பட்ட வருடாந்திர இந்தி பத்திரிகை குறித்து எடுத் துரைத்தார். இந்தி தினத்தை முன்னிட்டு நடத்தப் பட்ட பல்வேறு போட்டிகளில் வெற்றி பெற்ற மாணவர்களுக்கு பரிசு வழங்கப்பட்டது.

ज्ञानम् अनन्तम्

IIM
TRICHY

भारतीय प्रबन्धन संस्थान तिरुचिरापल्ली

Indian Institute of Management Tiruchirappalli

Pudukkottai Main Road, Chinna Sooriyur Village,
Tiruchirappalli - 620 024, Tamil Nadu.

cygnusadvertising.in